अतिरिक्त भाग

अब्राहम

विश्वास की परीक्षाएं

वचन पाठः उत्पत्ति 17:27–22:19

बाइबल के अनुसार विश्वास की एक अच्छी और सरल परिभाषा *''परमेश्वर की बात को विश्वास से मान लेना और भरोसे और प्रेम के साथ उस पर अमल करना है।''* यह परिभाषा दो आयतों इब्रानियों 11:1 और रोमियों 10:17 में मिलती है।

इब्रानियों 11:1 हमें विश्वास का विवरण देता है: ''अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।'' यह आयत कहती है कि विश्वास हमें बचाने के लिए परमेश्वर से उम्मीद करने का हमारा कारण, आधार, हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर और हमारे साथ उसकी अन्य सभी प्रतिज्ञाओं को बनाए रखता है। परमेश्वर के अस्तित्व और सच्चाई में भरोसे का आधार ही है जिसे विश्वास कहा जाता है।

रोमियों 10:17 हमें विश्वास के मूल के विषय में बताता है: ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' यह आयत इस बात की पुष्टि करती है कि विश्वास वचन से ही आता है। परमेश्वर के वचन को सुनने से विश्वास होता है।

इसलिए केवल उसी को जो परमेश्वर ने कहा है, मान कर ही सच्चा विश्वास पाया जा सकता है। आरम्भिक प्रचारकों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक उदाहरण हमें विश्वास, विचार और ज्ञान में अन्तर को समझने में सहायता करता है। मान लें कि मैंने मण्डली के सामने खड़े होकर उनके सामने मुट्ठी बंद की और उनसे पूछा, ''क्या आप बता सकते हैं कि मेरे हाथ में क्या है?'' उनमें से एक व्यक्ति कह सकता है कि मेरे हाथ में कुंजी थी। कोई और यह सुझाव दे सकता है कि मेरे हाथ में सिक्का है। किसी और के मन में आ सकता है कि मेरे हाथ में बटन है। इन उत्तरों को अच्छे अनुमान कहा जा सकता है, परन्तु हैं ये केवल अनुमान। मेरे हाथ में क्या था, इस बात का कोई प्रमाण नहीं था, इसलिए जो कुछ भी उन्होंने सुझाव दिया उसे उनका *विचार* कहा जा सकता है इसके अलावा कुछ और नहीं।

मान लो कि फिर मैंने उन्हें बताया कि मेरे हाथ में छोटा सा कंकर था। यदि उन्होंने मेरी बात सुन ली कि मेरे हाथ में क्या है, उसे मान लिया और उस पर विश्वास किया तो उनके द्वारा मेरी बात को मान लेना उन्हें विचार से *विश्वास* में ले जाएगा। उन्हें विश्वास दिलाने के लिए मेरी गवाही एक प्रमाण होगी।

मान लो कि मैंने उन्हें अपने हाथ में से उस कंकर को दिखा दिया। उसे देख लेने पर उन्हें पता चल जाएगा कि जो कुछ मैंने कहा था वह सच था। उस छोटी सी चीज़ को देखकर उनका विश्वास *ज्ञान* में बदल जाएगा।

जब उन्होंने अनुमान लगाया था कि मेरे हाथ में क्या है, तब वे अपने विचार दे रहे थे। जब उन्होंने मेरे हाथ में रखे कंकर के बारे में मेरी बात को मान लिया तो वे विश्वास करने वाले बन

गए। जब उन्होंने उसे जो मेरे हाथ में था देख लिया, तो उन्हें ज्ञान हो गया। विश्वास को विचार नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसका आधार गवाही है। विश्वास को ज्ञान नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह अनदेखी वस्तुओं की गवाही को मान लेना है।

बाइबल विश्वास की परिभाषा ही नहीं देती, इसे दिखाती भी है। बाइबल का आदमी जिसे परमेश्वर ने असली विश्वास का अपना श्रेष्ठ उदाहरण होने के लिए चुना उसका नाम अब्राहम है। अपने विश्वास के कारण उसे "परमेश्वर का मित्र" कहा जाता है (यशायाह 41:8; याकूब 2:23)। अपनी विश्वासयोग्यता के कारण उसे विश्वासियों का पिता कहा जाता है। यानी वे सब जो विश्वास करते हैं एक अर्थ में अब्राहम की सन्तान हैं (रोमियों 4:16; गलातियों 3:7)। परमेश्वर ने हमें अब्राहम के द्वारा दिखा दिया है कि विश्वास करने का अर्थ क्या है।

हम लोग विश्वास से चलते या जीवित रहते हैं (2 कुरिन्थियों 5:7), इसलिए आइए अब्राहम के जीवन में झांक कर देखते हैं कि विश्वासी होने का क्या अर्थ है। अब्राहम ने तीन बड़ी परीक्षाओं का सामना किया और ये परीक्षाएं विश्वास के उसके आवश्यक भागों का उदाहरण हैं।

छोड़ने की परीक्षा

अब्राहम या अब्राम, जैसा कि उसे पहले बुलाया जाता था, की पहली परीक्षा छोड़ने की परीक्षा थी। उसे कसदियों और हारान के ऊर में अपने परिवार से दूर चले जाने के लिए कहा गया था[1] (उत्पत्ति 11:27-31)। परमेश्वर ने उसे एक और जगह में ले जाने की प्रतिज्ञा दी। ऊर से पहली बुलाहट का समय लगभग 2165 ई.पू. था।[2] दूसरी बुलाहट शायद पंद्रह सौ साल बाद हारान से हुई थी।

ऊर नगर, जहां से उसे पहले बुलाया गया था, मैसोपोटामिया में था और यह सभ्यता, शिक्षा और वाणिज्य का केन्द्र था। ऊर को छोड़ने का अब्राहम का निर्णय कठिन रहा होगा।

पुरातत्वविदों ने ऊर की खुदाई से यह पता लगाया है कि यह नगर चार सौ मील तक फैला हुआ था और इसकी जनसंख्या लगभग 3,00,000 थी। ऊर एक महत्वपूर्ण और विकसित नगर था। इस बात की पुष्टि के लिए कि ऊर के लोग बहुत पढ़े-लिखे थे, इतिहास और पुरातत्व ज्ञान दोनों मिल जाते हैं। वे गणित, खगोलशास्त्र, बुनाई और नक्काशी में माहिर थे। इसके अलावा वे मिट्टी की पट्टियों पर अपने कुछ लेखों को पीछे छोड़ते हुए लिखावट का एक रूप इस्तेमाल करते थे, जो इस नगर के सामाजिक और धार्मिक जीवन और संस्कृति के पुनर्निमाण में पुरातत्वविदों के लिए बहुमूल्य रहा है। धार्मिक तौर पर नगर कई देवताओं की पूजा करने वाला होने के कारण बहुदेववादी था, जिसमें विशेष रूप से प्रकृति की पूजा की जाती थी। ऊर के बीच में पूजा का एक बड़ा केन्द्र या मन्दिर था जिसे जिगुरट कहा जाता था। यहां पर लोग अपने प्रधान देवता, चांद की पूजा करते थे, जिसे नन्ना कहा जाता था।[3]

यहोशू 24:2 संकेत देता है कि अब्राम का पिता तेरह मूर्तियों की पूजा किया करता था:

> तब यहोशू ने उन सब लोगों से कहा, इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस प्रकार कहता है, कि प्राचीन काल में अब्राहम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा परात महानद[4] के उस पार रहते हुए दूसरे देवताओं की उपासना करते थे।

यह नहीं बताया गया कि अब्राम को यहोवा परमेश्वर की समझ कब आई, परन्तु किसी समय वह उसमें जबर्दस्त और दिल से विश्वास करने लगा था।

जब अब्राम को परमेश्वर द्वारा बुलाया गया, तो तेरह और अब्राम ने ऊर को छोड़ दिया। वे उत्तर में छह सौ मील चलकर हारान में बस गए। उत्पत्ति 11:31 कहता है कि तेरह अब्राम को हारान में ले गया। अवश्य ही ऊर में अब्राम ने पहली बुलाहट के बाद तेरह को ऊर छोड़ने के लिए मनाया होगा; फिर कबीले का पुरखा होने के कारण तेरह उन्हें हारान में ले गया। अपने पिता की उम्र और सेहत को ध्यान में रखकर अब्राम हाराम में रुकने के लिए राज़ी हो गया होगा (उत्पत्ति 11:32–12:3) जहां 205 साल की उम्र में तेरह की मौत हो गई।

शायद पहली बुलाहट के पंद्रह साल बाद परमेश्वर ने अब्राम को फिर से हारान में बुलाया (उत्पत्ति 12:1–3)। इस बुलाहट के साथ परमेश्वर ने अब्राम के साथ एक प्रतिज्ञा की जिसे पुराने नियम का सार माना गया है।[f]

> यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे (उत्पत्ति 12:1–3)।

परमेश्वर ने अब्राम को अपने देश, अपने भाई–बन्धुओं और अपने पिता के घराने से चले जाने के लिए कहा। क्रम पर ध्यान दें तो एक–एक को छोड़ना बहुत बड़े बलिदान को दिखाता है।

क्या अब्राम परीक्षा में सफल हो गया? बाइबल कहती है कि ''यहोवा के इस वचन के अनुसार अब्राम चला ...'' (उत्पत्ति 12:4)। उसे हर उस बात को जो उसे प्रिय थी, यानी देश, रिश्तेदार और भाई–बन्धुओं को छोड़ना था। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के समय अब्राम पचहत्तर वर्ष का था (उत्पत्ति 12:4)। इब्रानियों 11:8 में हम पढ़ते हैं:

> विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेनेवाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया।

अब्राम हमारे लिए एक अच्छा उदाहरण है कि उसने अपने सामान को कैसे पैक किया, अपनी जड़ें उखाड़ीं, अपने देश से अलग हुआ और जहां भी परमेश्वर ने उसे जाने को कहा, वह गया। जब परमेश्वर ने उसे छोड़ने को कहा तो उसने छोड़ दिया। यही विश्वास है। ऐसा प्रत्युत्तर किसी के लिए भी देना कठिन होगा। परमेश्वर ने अपनी बुलाहट के लिए अब्राम के आज्ञापालन को विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में देखा।

यहां, फिर विश्वास से चलने का पहला भाग ''छोड़ना'' मिलता है। परमेश्वर ने हमें अपने देश को छोड़कर और जगहों पर जाने के लिए नहीं कहा है, जैसा कि उसने अब्राम से कहा था, परन्तु उसने सब को जो उसके पीछे चलते हैं, पाप के देश को छोड़कर धार्मिकता के प्रतिज्ञा किए हुए देश में विश्वास से उसके पीछे चलने के लिए कहा है।

ध्यान दें कि कलुस्से की मसीही लोगों के नाम पौलुस के पत्र में इस ''छोड़ना'' को कैसे बताया गया है:

> इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्तिपूजा के बराबर है। इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है। और तुम भी, जब इन बुराइयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। पर अब तुम भी इन सब को अर्थात क्रोध, रोष बैर-भाव, निन्दा और मुंह से गालियां बकना ये सब बातें छोड़ दो। एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुम ने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है (कुलुस्सियों 3:5-10)।

सीरियल किलर जैफरी दाहमर को विश्वासी बनने में सहायता करने वाले भाई कर्टिस बूथ ने हाल ही में मुझे बताया कि उन्होंने तिमोथी मैकवे के साथ अध्ययन किया था, जिसे ओक्लाहोमा नगर की फैडरल बिल्डिंग को उड़ाने का दोषी पाया गया था। उन्होंने कहा कि तिमोथी ने अपनी पेशी के लिए डैनवर में लाए जाने से पहले पंद्रह पाठों केद्वारा रास्ता बनाया था। जब मैंने भाई बूथ के साथ बात की थी तो उस समय उन्हें यह मालूम नहीं था कि कड़ी सुरक्षा की आवश्यकता के कारण उसे डैनवर में अध्ययन जारी रखने की अनुमति मिलेगी या नहीं। उन्होंने कहा कि वह प्रार्थना कर रहे थे कि उसका वकील उनके साथ बाइबल का पत्राचार पाठ्यकम्र जारी रखे और तिमोथी को पाठ पूरा करने की अनुमति मिल जाए और वह उन पाठों को उन्हें लौटा सके। भाई बूथ की विनती का उत्तर मिला या नहीं, मालूम नहीं।

सुसमाचार सबके लिए है। यानी उनके लिए जिन्हें हम सबसे बुरे मानते, बीच के और सबसे अच्छे लोगों के लिए। यहूदी और अन्यजाति दोनों का उद्धार विश्वास के द्वारा होता है। परमेश्वर दोनों में कोई अन्तर नहीं करता (प्रेरितों 15:9)। सबके लिए उद्धार दिलाने वाले विश्वास में मन फिराव अर्थात पाप के जीवन को ''छोड़ना'' और धार्मिकता में परमेश्वर के पीछे चलना है (प्रेरितों 17:30, 31)। परमेश्वर हम में से किसी को भी ग्रहण कर लेगा परन्तु हमें उसके पास विश्वास से आना आवश्यक है, उस विश्वास से जो हमें पाप को छोड़कर उसमें अपनी आशा रखने को विवश करे।

भरोसा रखने की परीक्षा

अब्राम जब कनान में पहुंचा तो उसे दूसरी परीक्षा अर्थात भरोसा करने की परीक्षा का सामना करना पड़ा। परमेश्वर ने अब्राम को आशीष देने की प्रतिज्ञा दी थी। अपने भविष्य के बारे में उलझन में पड़े अब्राम ने परमेश्वर से कहा, ''हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्वंश हूं ... सो तू मुझे क्या देगा'' (उत्पत्ति 15:2)। परमेश्वर ने कहा कि उसकी सन्तान अब्राम के लिए उसकी योजनाओं का भाग होगी यानी वह अब्राम और सारै को पुत्र देगा:

> और उस ने उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन,

क्या तू उनको गिन सकता है ? फिर उस ने उस से कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा। उस ने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना (उत्पत्ति 15:5, 6)।

परमेश्वर ने अब्राम को यह भी बताया कि वह उसे पलिश्तीन पर अधिकार देगा (उत्पत्ति 15:7)। आश्वासन चाहते हुए अब्राम ने परमेश्वर से पूछा, ''... मैं कैसे जानूं कि मैं इसका अधिकारी होऊंगा?'' उसके प्रश्न के उत्तर में परमेश्वर ने अब्राम के साथ अभ्यास करते हुए एक तरह की वाचा बान्धी।

पुराना नियम सचमुच में मनुष्य के साथ परमेश्वर की वाचाओं की कहानी है। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ अपनी वाचा को दिखाने के लिए समझौते का संस्कार इस्तेमाल किया। उसने उसे तीन साल का मेमना, यानी तीन साल की बकरी, तीन साल का मेढ़ा और एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा लेने को कहा। उसे कलोर, बकरी, और मेढ़ा को बीच में से काटना था। अब्राम ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। उसने कलोर, बकरी और मेढ़े को बीच में से काट कर दोनों भागों के बीच रास्ता बनाकर उन्हें एक-दूसरे के सामने रख दिया। उस रात एक रहस्यमयी जलती हुई अंगीठी उन टुकड़ों के बीच में से निकल गई (उत्पत्ति 15:7-17)।

वाचा बान्धने के इस ढंग से सम्भवतया ''वाचा काटना'' की अभिव्यक्ति बन गई। इसमें पाया जाने वाला विचार यह प्रतीत होता है कि ''यदि तुम इस समझौते को नहीं मानते, तो तुम वैसे ही काट दिए जा सकते हो, जैसे ये पशु काटे गए हैं।'' आदर्श रूप में दोनों पक्षों ने उन लाशों के बीच में से चलना था, परन्तु इस मामले में वाचा बान्धने वाला परमेश्वर था। यह एक पक्षीय वाचा थी, जिस कारण रास्ते में से वही चला।

परमेश्वर अब्राम के लाभ के लिए उस कार्यक्रम में से गुजरा। परमेश्वर अनादि परमेश्वर है। उसकी सब बातें पूर्ण हैं। उसका वचन सत्य है और उसमें रत्ती भर भी कमी नहीं है। उसे किसी को कुछ भी साबित करने की आवश्यकता नहीं। उसकी कोई भी प्रतिज्ञा पृथ्वी के आधार की तरह पक्की है। परन्तु परमेश्वर इस कर्मकांड से गुजरा ताकि अपने विश्वास के लिए अब्राम को परमेश्वर की ओर से गवाही मिल जाए।

अगले कुछ वर्षों के लिए अब्राम का काम परमेश्वर की प्रतिज्ञा में भरोसा करना था। स्पष्टतया अब्राम और सारै को लगा कि परमेश्वर को चाहिए कि उन्हें तुरन्त उनका पुत्र दे दे। परन्तु उसने नहीं दिया। दस साल की प्रतीक्षा के बाद (उत्पत्ति 16:3) जो उन दोनों के लिए अनन्तकाल जैसा लगता होगा, उन्होंने कुछ करना चाहा। उन्होंने मामले को अपने हाथ में लेना चुना। यहां अब्राम के विश्वास के कमज़ोर होने की बात मिलती है।

सारै ने सुझाव दिया कि अब्राम उनके लिए सन्तान पैदा करने के लिए हाजरा को दूसरी पत्नी के रूप में ले ले (उत्पत्ति 16:1-4)। अब्राम ने सारै का सुझाव मान लिया। सारै को कोई बच्चा नहीं हुआ था, इसलिए अब्राम यह तर्क दे रहा होगा कि हाजरा के द्वारा वंश देना परमेश्वर का अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने का ही ढंग होगा। यहां अब्राम गलत था, क्योंकि प्रतिज्ञा की हुई सन्तान परमेश्वर के अपने समय में सारै के द्वारा ही आनी थी। अब्राम और सारै कुछ अधिक ही उतावले थे।

अब्राम के काम चाहे गलत थे, और उनमें विश्वास की कमी दिखाई दी, परन्तु उन्हें उस समय के रीति-रिवाजों की पृष्ठभूमि के विपरीत समझा जाना आवश्यक है। आधुनिक पाठक को अजीब लग सकता है, परन्तु अब्राम और सारै का अपनी समस्या से निपटने का ढंग सम्भवतया उस समय और उस समाज में मान्य ढंग माना जाता होगा। हमूरबी के नियम[6] और मूजी दस्तावेजों[7] से संकेत मिलता है कि बांझ पत्नी अपने पति को अपनी कोई दासी देकर उससे पैदा हुई सन्तान को कानूनी अधिकार दिला सकती थी। बच्चे के जन्म के बाद दासी को गुलाम के रूप में ही अपनी जगह अधीनता से रहना होता था।

सारै की दासी हाजरा के एक पुत्र इश्माएल का जन्म हुआ, परन्तु परमेश्वर ने स्पष्ट कर दिया कि वंशावली की प्रतिज्ञा उसके द्वारा नहीं दी गई थी (उत्पत्ति 16:7-16; 17:20, 21)। इश्माएल के जन्म के बाद सारै कुढ़ने लगी और उसने चाहा कि अब्राम हाजरा और उसके पुत्र को उनके घर से निकाल दे। सारै के क्रोध से अब्राम बड़ा दु:खी हुआ, जो उस परेशानी को जो पहले से थी और नहीं बढ़ाना चाहता था।

परमेश्वर ने अब्राम और सारै को फिर आश्वासन दिया कि वह पुत्र देने की प्रतिज्ञा उनके साथ पूरी करेगा। उसने उनके नाम बदलकर उन्हें दिलेरी दी। ''अब्राम'' का नाम बदलकर ''अब्राहम'' (उत्पत्ति 17:5) और ''सारै'' का नाम बदलकर ''सारा'' रख दिया गया (उत्पत्ति 17:15)। इसका महत्व यह था कि अब्राहम ने असल में ''कई जातियों का पिता'' होना था और इन जातियों की माता के रूप में सारा ने परमेश्वर के सामने ''राजकुमारी'' होना था।

इसके अलावा परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा की पुष्टि की कि वह ''वाचा का चिह्न'' बनाकर जो परमेश्वर ने अब्राहम से बान्धी थी, अब्राहम और सारा को एक पुत्र देगा (उत्पत्ति 17:1-14)। उसने अब्राहम के घराने के हर नर के लिए निर्देश दिया कि उनका खतना किया जाए:

> मेरे साथ बान्धी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात् तेरे वंश को पालनी पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक पुरुष का खतना हो। तुम अपनी अपनी खलड़ी का खतना करा लेना; जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा। पीढ़ी पीढ़ी में केवल तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हों, वा परदेशियों को रूपा देकर मोल लिये जाएं, ऐसे सब पुरुष भी जब आठ दिन के हों जाएं, तब उनका खतना किया जाए (उत्पत्ति 17:10-12)।

पुत्र के जन्म से पहले ही परमेश्वर ने अब्राहम पर वाचा की कई जिम्मेदारियां डाल दीं। उसे वाचा के चिह्न के रूप में हर नर का खतना करने के लिए कहा गया। उस समय से लेकर हर नर बालक के आठ दिन का हो जाने पर उसका खतना किया जाना आवश्यक था। इस शारीरिक खतने का आत्मिक महत्व होना था; अब्राहम की सन्तान के घर पैदा होने वाला हर लड़के में यह चिह्न इस बात का संकेत था कि वह परमेश्वर के साथ की गई वाचा का भाग है।

इस समय परमेश्वर द्वारा इस चिह्न को आरम्भ करने का एक कारण, इसहाक के जन्म के लिए अब्राहम को तैयार करना था। यह पुत्र वाचा की प्रतिज्ञाओं का साकार होना था। वह उससे और सारा से पैदा होने वाले पुत्र पर वाचा का चिह्न देकर वाचा को जारी रखने के लिए अब्राहम

को तैयार रखना चाहता था।

अब्राहम को इश्माएल के जन्म से पहले चाहे काफी प्रतीक्षा करनी पड़ी थी परन्तु प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र के आने से पहले उसे चौदह और साल प्रतीक्षा करनी पड़ी। अन्त में जब अब्राहम निन्यानवें साल का हुआ (उत्पत्ति 17:1) तो परमेश्वर ने उसे विशेष रूप से इसहाक के आने के बारे मे बात की (उत्पत्ति 17:15-19; 18:10-15)। परन्तु अब तक इतने वर्ष बीत चुके थे कि अब्राहम (उत्पत्ति 17:17) और सारा (उत्पत्ति 18:12-15)दोनों पुत्र के होने की सम्भावना पर अपने-अपने मन में हंसे। स्पष्टतया उनका विश्वास जवाब दे चुका था।

इसहाक का सचमुच में जन्म हुआ जब अब्राहम एक सौ साल का और सारा नब्बे साल की थी। अब्राहम को पुत्र देने की परमेश्वर की पहली प्रतिज्ञा को अब तक पच्चीस साल हो चुके थे।

परमेश्वर ने अब्राहम को पुत्र देने में पच्चीस साल क्यों लगा दिए? सम्भवतया दो कारण दिए जा सकते हैं। पहला इस देरी से अब्राहम के विश्वास की बड़ी परीक्षा हो गई। क्या अब्राहम को अभी भी विश्वास होगा कि परमेश्वर इतनी देर बाद अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेगा? जैसा कि हमने देखा है उसका विश्वास कुछ हद तक कम हो चुका था, पर कुल मिलाकर उसमें गम्भीर गिरावट नहीं आई थी। दूसरा इस देरी से अब्राहम यह एहसास करने के लिए विवश हुआ कि उससे निकलने वाली जाति केवल परमेश्वर की ओर से होनी थी। परमेश्वर ने सारा के बच्चे जनने का स्वाभाविक समय बीत जाने की प्रतीक्षा की ताकि वह दिखा सके कि अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा की सन्तान सचमुच में परमेश्वर की ओर से होनी थी। इसहाक ने अब्राहम और सारा से जन्म लेने के बावजूद विलक्षण रूप से परमेश्वर की सन्तान होना था। उत्पत्ति 21:1-4 कहता है:

> सो यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि लेके उसके साथ अपने वचन के अनुसार किया। सो सारा को इब्राहीम से गर्भवती होकर उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उस से ठहराया था एक पुत्र उत्पन्न हुआ। और इब्राहीम ने अपने पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ था इसहाक रखा। और जब उसका पुत्र इसहाक आठ दिन का हुआ, तब उस ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार उसका खतना किया।

इब्रानियों 11:11, 12 में हम फिर पढ़ते हैं:

> विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को सच्चा जाना था। इस कारण एक ही जन से जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू की नाईं, अनगिनित वंश उत्पन्न हुआ।

बहुत देर के बाद अब्राहम और सारा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उस पुत्र का नाम परमेश्वर की ओर से इसहाक रखा गया, जिसका अथ है, ''हंसाने वाला।''

अब्राहम का विश्वास कुछ कम हुआ था, परन्तु वह विश्वास करता रहा। उसने मामले को अपने हाथ में लेने और परमेश्वर को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में सहायता की कोशिश की, परन्तु परमेश्वर ने इसकी अनुमति नहीं दी। अब्राहम का जीवन कम से कम यह तो दिखाता है कि सच्चे विश्वास के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में भरोसा करना आवश्यक है।

फिर विश्वास की दूसरी बात परमेश्वर के वचन में भरोसा करना है। विश्वास की किसी भी प्रामाणिक चाल में परमेश्वर के वचन में भरोसा करना शामिल होगा। उदाहरण के रूप में बपतिस्मे की आज्ञा को ले लेते हैं। बपतिस्मे के बारे में आपने कभी किसी को यह कहते सुना है, "मुझे समझ नहीं आता कि पानी में डुबकी लगाने से किसी का उद्धार कैसे हो सकता है"? सच्ची बात तो यह है कि परमेश्वर ने हमें इसे *दिखाने* के लिए नहीं कहा, उसने तो हमें *इस पर विश्वास* करने के लिए कहा है! (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38; 22:16)। उसने अब्राहम से यह *देखने* को नहीं कहा कि वह उसे बच्चा कैसे देगा बल्कि इस पर *विश्वास* करने को कहा!

परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में खड़े होने की सबसे स्पष्ट जगहों में से एक बपतिस्मे के पानी में खड़े होना है। डुबकी नहाना या शारीरिक चंगाई के लिए नहीं है। यह तो पानी में शरीर को बिना किसी हानि के डुबोना है। बपतिस्मे की एक ही बात है जो इसे मूल्यवान बना देती है वह इससे जुड़ी परमेश्वर की प्रतिज्ञा है। मसीह में बपतिस्मे की हमें कोई साकार प्रत्युत्तर नहीं मिलता न ही स्वर्ग से कोई आवाज़ सुनाई देती है न पानी में से बाहर निकलने के समय कोई ईश्वरीय ज्योति न बपतिस्मा लेने वाले पर कोई अलौकिक एहसास उतरता है। कुछ भी आश्चर्यकर्म नहीं होता। बपतिस्मा लेने वाला केवल परमेश्वर की प्रतिज्ञा में भरोसा कर रहा होता है। वह भरोसा रखकर पानी में जाता/जाती है और भरोसे के साथ पानी में से बाहर आता/आती है। बपतिस्मा उद्धार के लिए विश्वास का एक कार्य है। जब कोई नया मसीही पानी में से बाहर आता है, तो हम मानते हैं कि स्वर्ग के परमेश्वर ने अपना वचन निभाकर उस व्यक्ति के पाप यीशु के लहू में धो डाले हैं।

जब कोई परमेश्वर के साथ चलना चुनता है तो उसके लिए उसके वचन के द्वारा परमेश्वर के अधीन होने का निर्णय लेना आवश्यक है न कि विशेष चिह्नों, असामान्य भावनाओं या अलौकिक अगुआई के द्वारा। इस चलने के लिए स्पष्टतया परमेश्वर के वचन में भरोसा रखकर प्रतिदिन परमेश्वर में भरोसा रखना आवश्यक है।

देने की परीक्षा

इसहाक के जन्म के बाद किसी समय अब्राहम को तीसरी परीक्षा अर्थात देने की परीक्षा का सामना करना पड़ा। परमेश्वर ने अब्राहम से अपने पुत्र इसहाक को बलिदान के रूप में देने के लिए कहा। यह परीक्षा विश्वास की अब्राहम की सबसे बड़ी परीक्षा थी।

बाइबल यह नहीं बताती कि यह आज्ञा दिए जाने के समय इसहाक की उम्र की थी। शायद वह दस साल से बड़ा नहीं था। वह बिना किसी स्पष्ट विरोध के अपने पिता की आज्ञा मानते हुए उसके साथ गया। उसका प्रश्न कि "पर होमबलि के लिए भेड़ कहां है?" (उत्पत्ति 22:7) संकेत देता है कि वह इतना बड़ा था कि वह तर्क कर सकता था। इससे यह भी पता चलता है कि वह इतना छोटा था कि उसके दिमाग में यह प्रश्न पहाड़ पर पहुंचने से पहले या पहाड़ की ओर जाने के लिए निकलने से पहले अब्राहम द्वारा उसे न बताने से पहले नहीं आया था।

परमेश्वर ने अब्राहम को इसहाक को बलिदान करने की आज्ञा देते हुए ऐसे बात की थी जिससे अब्राहम को पूरी तरह से समझ आ जाए कि परमेश्वर उसे क्या करने को कह रहा है। परमेश्वर ने उससे कहा था:

अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहां उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा (उत्पत्ति 22:2)।

परमेश्वर ने इतना ही नहीं कहा कि ''इसहाक को ले।'' उसने उसे तीन अनन्तकालिक ढंगों में सम्बोधित किया। उसने कहा, ''अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिस से तू प्रेम रखता है, संग ले, ...।''

हमें यह नहीं बताया गया कि अब्राहम ने इस आज्ञा को कैसा समझा। अब्राहम के आस-पास की मूर्तिपूजक कौमें में बच्चों के बलिदान किए जाते थे। यह बहुत कम होता था परन्तु होता अवश्य था। क्या अब्राहम को लगा कि ''परमेश्वर चाहता है कि मैं उसके प्रति अपनी श्रद्धा को दिखाऊं जैसे अन्यजाति लोग देवी-देवताओं के प्रति दिखाते हैं''? हमें नहीं मालूम की उसके मन में क्या आया परन्तु हम इतना जानते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए वह तुरन्त वहां से निकल गया।

परमेश्वर ने उसको ऐसी आज्ञा क्यों दी? जो कुछ मोरिय्याह पहाड़ पर हुआ, उसे पढ़कर हमें पता चलता है कि परमेश्वर ने नर बलि नहीं चाही थी। हो सकता है कि परमेश्वर चाहता हो कि अपने सबसे प्रिय और सबसे कीमती चीज़ को देकर अब्राहम उसमें अपना भरोसा दिखाए। परमेश्वर ने इसहाक का मांगा सारा को नहीं, क्योंकि अब्राहम को दी गई सभी प्रतिज्ञाएं इसहाक से जुड़ी हुई थीं। इसके अलावा परमेश्वर केवल अब्राहम का पुत्र ही नहीं मांग रहा था। वह अब्राहम का दिल और उसका भविष्य मांग रहा था, यानी वह अब्राहम से अपना सब कुछ देने को कह रहा था।

अब्राहम ने क्या किया। आज्ञा मिलने के बाद उसने तुरन्त लकड़ियां और आग इकट्ठी की, सफर के लिए आवश्यक दो सेवकों को बुलाया और मोरिय्याह पहाड़ के लिए तीन दिन का सफर शुरू कर दिया, जहां बलिदान किया जाना था। जब वे पहाड़ के पास पहुंचे तो अब्राहम ने सेवकों को यह कहकर रोक दिया कि ''यह लड़का और मैं वहां तक जाकर, और दण्डवत करके, फिर तुम्हारे पास लौट आएंगे'' (उत्पत्ति 22:5)। अब्राहम को परमेश्वर पर इतना विश्वास था कि वह अपने इकलौते पुत्र को भी वेदी पर ले जाने को तैयार था। उसे परमेश्वर में इतना भरोसा था कि उसे उम्मीद थी कि उसके द्वारा अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए परमेश्वर उसे मुर्दों में से जिला देगा। इब्रानियों की पत्र की लेखक इस घटना के अपने विवरण में अब्राहम के विश्वास की गहराई का संकेत देता है:

विश्वास ही से अब्राहम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। और जिससे यह कहा गया था, कि इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा; वह अपने इकलौते को चढ़ाने लगा। क्योंकि उसने विचार किया, कि परमेश्वर सामर्थी है, कि मरे हुओं में से जिलाए, सो उन्हीं में से दृष्टान्त की रीति पर वह उसे फिर मिला (11:17-19)।

जब अब्राहम और इसहाक पहाड़ की चोटी पर पहुंचे तो अब्राहम ने चुपके से वेदी बनाई

होगी, जिस पर बलिदान किया जाना था। एक के ऊपर एक पत्थर लगाते हुए उसने इसे पक्का और मजबूत कर लिया। हमें नहीं मालमू कि अब्राहम ने इसहाक को बलिदान के लिए वहां कैसे रखा। शायद वह इसहाक के साथ बैठ गया, अपनी गोद में उठाते हुए कहा, ''इसहाक, मैं कुछ ऐसा करने जा रहा हूं, जिसकी परमेश्वर ने आज्ञा दी है। मुझे इसकी समझ तो नहीं है परन्तु सब ठीक हो जाएगा। परमेश्वर पर भरोसा किया जा सकता है। बचपन से मैं तुझे परमेश्वर में भरोसा रखना ही सिखाता आ रहा हूं। हमें अब उस पर पूरा भरोसा रखना होगा। यदि हम उसमें पूरा विश्वास रखते हैं तो वह हम दोनों को सम्भाल लेगा। मैं तुझे बान्ध कर इस वेदी पर रखने वाला हूं, पर घबराना नहीं, क्योंकि परमेश्वर तुझे सम्भालेगा।''

उनकी बातचीत के बाद अब्राहम ने इसहाक को बान्ध कर धीरे से वेदी पर लिटा दिया। वह यह काम जल्दी से निपटा लेना चाहता होगा ताकि इसहाक हो अधिक दर्द न हो। उसने चाकू निकाल लिया। इसहाक की गर्दन की ओर नीचे लाते हुए सूरज की रोशनी पड़ने से उसमें से किरणें निकलीं। चाकू को उठाकर इसे नीचे लाने के एक सैकण्ड के दौरान आकाश से एक आवाज़ आई, ''हे अब्राहम, हे अब्राहम; ... उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उस से कुछ कर: क्योंकि तू ने जो मुझसे अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इससे मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है'' (उत्पत्ति 22:11, 12)। अब्राहम ने विश्वासयोग्यता और वफादारी से देने की परीक्षा पास कर ली थी। उसने संसार की अपनी सबसे प्रिय वस्तु वेदी पर रख दी थी, यानी अपना सब कुछ परमेश्वर को दे दिया था।

अब्राहम के काम को कोई भी पाठक तुरन्त समझ जाता है। पहले तो इसमें अब्राहम परमेश्वर को अपना दिल भेंट कर रहा था यानी जिससे वह अपने प्राण से प्रेम रखता था। दूसरा इस भेंट के बाद इसहाक को उसे लौटाने में परमेश्वर पर भरोसा कर रहा था कि उसके द्वारा परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा कर सकता था।

इस घटना में अब्राहम के साथ जो कुछ परमेश्वर ने किया उसे एक आदमी की कहानी से दर्शाया जा सकता है जो परमेश्वर को मानने लगा था। विश्वासी होने के जल्द बाद परमेश्वर ने उससे कहा, ''तेरे पास क्या है?'' उसने कहा, ''मेरे पास एक घर है।'' परमेश्वर ने कहा, ''मुझे वह चाहिए।'' परमेश्वर ने कहा, ''तेरे पास और क्या है?'' उसने कहा, ''मेरे पास एक कार और बैंक में कुछ पैसे हैं।'' परमेश्वर ने कहा, ''मुझे वह कार और बैंक से पैसे चाहिए।'' परमेश्वर ने कहा, ''तेरे पास और क्या है?'' उसने कहा, ''अब मेरे पास मेरी पत्नी और दो बच्चे हैं।'' परमेश्वर ने कहा, ''तेरे पास और क्या है?'' उसने कहा, ''अब तो मेरे पास और कुछ नहीं, केवल मैं ही बचा हूं।'' परमेश्वर ने कहा, ''मुझे तुम भी चाहिए।'' उसने कहा, ''ठीक है प्रभु, जो कुछ मेरे पास है या मेरा है वह सब ले लो। अब क्या करूं?'' परमेश्वर ने कहा, ''मैं वह सब तुझे अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करने को वापस दे दूंगा, जब तक मुझे लगे कि तू इसका इस्तेमाल समझदारी से कर रहा है।'' अब्राहम के साथ परमेश्वर ने यही किया।

यहां एक और सच्चाई देखी जाती है: जब अब्राहम ने परमेश्वर को अपना पुत्र दे दिया तो परमेश्वर ने उसे *सदा के लिए* अब्राहम को लौटा दिया। बाद में नये नियम में यीशु ने परमेश्वर को ''अब्राहम, इसहाक, याकूब'' का परमेश्वर कहा। यीशु ने कहा कि परमेश्वर *है* न कि *था*। यीशु के ये बातें कहने के समय ये तीनों अनन्तकाल में परमेश्वर के साथ थे (मत्ती 22:32)।

याद रखें: जो कुछ हम परमेश्वर को देते हैं वही हमें अपने पास रखने के लिए मिलता है। जीवन घरों, भूमि, धन में नहीं और न पतियों, पत्नियों या बच्चों में है चाहे वे कितने भी कीमती क्यों न हों। सच्चा जीवन विश्वास में परमेश्वर के साथ चलने में पाया जाता है। ऐसी चाल से परमेश्वर को महिमा मिलती है और दूसरे सब सम्बन्धों में यह अव्वल होता है।

फिर यहां विश्वास की तीसरी बात परमेश्वर को देना मिलती है। परमेश्वर का प्रेम देने वाला प्रेम है, क्योंकि वह एक नि:स्वार्थ परमेश्वर, प्रेमी परमेश्वर है, जो हमेशा हमारे साथ बांटकर और हमें देकर हमें आशीष देना चाहता है। इस प्रेमी परमेश्वर के साथ चलने के लिए बेशक हमारी ओर से भी देना बल्कि बलिदानपूर्वक देना शामिल है। कोई भी जो बिना दया के, सेवा के और देने के है, विश्वास में नहीं चल सकता।

अमेरिका में बड़ी मंदी के दौरान एक धनवान प्रेरितों 2:38 को बहुत दोहराता था। वह अक्सर लोगों को बपतिस्मे का महत्व दिखाने के लिए इसका उल्लेख करता। परन्तु रविवार सुबह चन्दे की थाली उसके पास आने पर वह केवल एक सिक्का ही डालता। उस समय कलीसिया परेशानी के दौर से गुजर रही थी और उसके पास सहायता करने के साधन थे, परन्तु वह केवल दस सेंट ही दिया करता था। वह प्रेरितों 2:38 दोहरा तो सकता था परन्तु इसका अर्थ नहीं समझता था। यह आयत सिखाती है कि हर कोई जो सचमुच मन फिराकर बपतिस्मा लेता है, वह विश्वास की चाल चलने लगता है। इस चाल में नि:स्वार्थ देना और जीवन दोनों शामिल हैं।

सारांश

अब्राहम द्वारा पास की गई तीन परीक्षाएं हमें यह समझने में सहायता करती हैं, कि सच्चा विश्वास क्या है और यह व्यक्ति के हृदय में कैसे काम करता है। *विश्वास परमेश्वर के वचन को मानना और भरोसे और प्रेम से उन बातों पर अमल करना है।* ऐसे विश्वास को तीन भागों में बांटा जा सकता है: उसे छोड़ देना जिसे परमेश्वर ने छोड़ने के लिए कहा है, परमेश्वर की आज्ञाओं और प्रतिज्ञाओं में भरोसा करना और उसे और परमेश्वर को और उसके काम के लिए उसके निर्देश के अनुसार अपने जीवन और सम्पत्ति दे देना।

क्या आपने कभी किसी छोटे से पुल पर से चलना आरम्भ किया है, परन्तु यह सोचकर कि यह आपका भार नहीं उठा पाएगा आप पीछे हट गए? शायद आप इसकी मजबूती को चैक करने के लिए एक कदम आगे बढ़े। अन्त में धीरे-धीरे आप उसे पार करके दूसरी ओर चले गए। यह यकीन हो जाने पर कि यह आपका बोझ उठा लेगा आप आश्वस्त होकर बार-बार इधर-उधर आ जा सकते हैं। विश्वास से चलने का यही अर्थ है। आप परमेश्वर के वचन के प्रमाण को मान लेते और परमेश्वर की ओर से दी गई उस सच्चाई पर अपना बोझ डाल सकते हैं आप उस सच्चाई पर बने रहकर, उस सच्चाई पर चलते और उस सच्चाई पर भरोसा रखकर अनन्तकाल में जाते हैं। परमेश्वर तक जाने के लिए आपका पुल उसके वचन की सच्चाई है। विश्वास की चाल भावनाओं, मान्यताओं या काल्पनिक चिह्नों पर आधारित नहीं है। यह परमेश्वर के वचन के पुल के बीच तक सीधे जाना है।

आप पूछ सकते हैं, ''क्या ऐसे चलने से कोई इनाम मिलता है?'' हां, विश्वासी व्यक्ति को दो महत्वपूर्ण प्रतिफल मिलते हैं। न केवल उसे परमेश्वर की आशिषें मिलती हैं बल्कि स्वयं

परमेश्वर भी मिलता है। परमेश्वर की ओर से सबसे बड़ा गिफ्ट परमेश्वर ही है। उत्पत्ति 15:1 में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, ''हे अब्राम, मत डर; तेरी ढाल और तेरा अत्यंत बड़ा प्रतिफल मैं हूं।'' परमेश्वर के साथ चलते हुए अब्राहम को परमेश्वर की आशिषें ही नहीं बल्कि आशीष देने वाला परमेश्वर भी मिला। यही निमन्त्रण हम में से हर किसी के लिए है। परमेश्वर कहता है, ''आओ मेरे साथ चलो, और मैं तुम्हें अपनी उपस्थिति और अपने उपाय दूंगा।'' क्या आप विश्वास से चलना आरम्भ करेंगे?

सीखने के लिए सबक:
विश्वास परमेश्वर के वचन को मानना और इस पर अमल करना है।

टिप्पणियां

[1]पुराना नियम विशेषकर उल्लेख करता है कि अब्राहम को ईश्वरीय बुलाहट हारान से हुई थी (उत्पत्ति 12:1); स्तिफनुस के सम्बोधन में (7:2, 3) नया नियम अब्राहम की ईश्वरीय बुलाहट ऊर से हुई बताता है। अब्राहम को परमेश्वर ने पहले कहां से बुलाया? ऊर से बुलाया या हारान से? अब्राहम को पहली बुलाहट ऊर से हुई जो यह संकेत देता है कि पुराने नियम में उत्पत्ति 15:7 और नहेम्याह 9:7 में, और नये नियम में प्रेरितों 7:2, 3 में स्पष्ट बताया गया है। इस प्रकार उसे दो बुलाहटें हुई एक तो ऊर से और दूसरी हारान से। [2]जॉन जे. डेविस, *पैराडाइज टू प्रिज़्म: स्टडीज़ इन जेनिसस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिनगः बेकर बुक हाउस, 1975), 160. [3]जिन ए. गेट्ज़, *अब्राहम* (वैनचुरा, कैलिफोर्निया: रीगल बुक्स, 1976), 11. [4]यानी फरात। 3, 14 और 15 आयतों में भी देखें। [5]पांच अलग-अलग अवसरों पर, अब्रहम को परमेश्वर की ओर से प्रतिज्ञाएं मिलीं, जिन्हें मिलाने पर वे अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा बन जाती है। पहली घटना अब्राहम के प्रतिज्ञा किए हुए देश में पहुंचने की (ऊपत्ति 12:1-3); दूसरी लूत के उससे अलग होने के बाद (उत्पत्ति 13:14-17); तीसरी अब्राहम के लूत को चार राजाओं से छुड़ाने केबाद की (उत्पत्ति 15:1-21); चौथी उस समय की जब सदोम के विनाश से थोड़ा पहले अब्राहम निन्यानवें साल का था (उत्पत्ति 17:1-22); और पांचवीं इसहाक को बलिदान करने की परमेश्वर की आज्ञा के कई साल बाद की (उत्पत्ति 22:15-18)। पांचों बार जो कुछ परमेश्वर ने कहा उन सबका अवलोकन करने के बाद प्रतिज्ञा की तीन मुख्य क्षेत्र देखें जा सकते हैं। पहला अब्राहम की सन्तान ने एक कौम के आकार में बढ़कर उसके विशेष लोग होना था (उत्पत्ति 12; 13:16; 15:2-5; 17:4-6; 22:17)। दूसरा जिस देश में परमेश्वर अब्राहम को लाया था वह इस कौम को मिलना था (उत्पत्ति 13:14-17; 15:18; 17:8)। तीसरा उसकी सन्तान संसार के लिए यहां तक एक आशीष होनी थी कि उसके द्वारा सब जातियों को आशीष मिली थी (12:2, 3; 18:18; 22:18)। यह अन्तिम प्रतिज्ञा यहूदा के गोत्र के द्वारा संसार में मसीहा के आने से पूरी हुई (गलातियों 3:16)। [6]बाबुल के एक राजा हमूरबी (1728-1686 ई.पू.) ने अपने लोगों के लिए एक नियमावली लिखी जो आज के दिन तक है। [7]टिगरिस के पूर्व में नूज़ी नामक नगर की खुदाइयों से पुरातत्वविदों को मिट्टी के दस्तावेज़ों का चकित करने वाला संग्रह मिला है, जिससे बाइबल के प्राचीन देशों की परम्पराओं की गहन जानकारी मिली है। इन दस्तावेज़ों में से अधिकतर का समय पन्द्रह शताब्दी ई.पू. माना गया है। पटिकाओं पर मिलने वाली पम्पराओं और नियमों से इब्रानी कुलपति समाज के समय के चौंकाने वाली बातों का पता चलता है।

नूह

आदमी जिसने मनुष्यजाति को बचाया

वचन पाठ: उत्पत्ति 6:5–9:17

कुछ नाम बड़ी घटनाओं के साथ हमेशा तक जुड़ जाते हैं। जब हम निर्गमन के बारे में सोचते हैं तो हमारा ध्यान मूसा की ओर जाता है। जब हम पहले सुसमाचार संदेश के बारे में सोचते हैं तो हमारा ध्यान पतरस की ओर जाता है। जब हम जल-प्रलय के बारे में सोचते हैं तो हमारे मन में क्या आता है? नूह-वह आदमी जिसने परमेश्वर के उपाय के द्वारा, मनुष्यजाति को खत्म होने से बचा लिया।

पूरे मसीही युग में बाइबल के पाठक नूह की कहानी से और इसके द्वारा दिए जाने वाले सबक से रोमांचित होते हैं कि वफादारी से परमेश्वर की आज्ञा मानने वाले बच जाएंगे, दूसरे चाहे सब नाश हो जाएंगे। कब्रों के तहखानों की दीवारों की तस्वीरें जहां रोम में सताए जाने वाले आरम्भिक विश्वासियों ने अपने मुर्दों को जी उठने की उम्मीद से डाल दिया था, मसीही विश्वास और आशा की झलक देती हैं। यहां दिखाए गए दृश्यों में दो दृश्य बार-बार दोहराए गए हैं: समुद्र के विशाल जन्तु से बचते हुए योना और जल-प्रलय में से अपने परिवार के साथ बचा नूह। नूह की कहानी से हमें भी प्रेरणा और निर्देश मिल सकता है। आइए "आदमी जिसने मनुष्यजाति को बचाया"[1] के गुणों की समीक्षा करके देखते हैं कि उसे ऐसा करने के योग्य किसने बनाया।

वह एक धर्मी पुरुष था

नूह उस समय सामने आया जब संसार अधर्म में डूबा हुआ था:

> और यहोवा ने देखा, कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है, और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है। ... उस समय पृथ्वी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी, और उपद्रव से भर गई थी। और परमेश्वर ने पृथ्वी पर जो दृष्टि की तो क्या देखा, कि वह बिगड़ी हुई है; क्योंकि सब प्राणियों ने पृथ्वी पर अपनी अपनी चाल चलन बिगाड़ ली थी (उत्पत्ति 6:5-12)।

बाइबल इस परिस्थिति के मूल से निपटती है। उस युग की बुराई का विवरण देते हुए यह अपराध के विशेष कामों का उल्लेख नहीं करती परन्तु संकेत देती है कि मनुष्य का *मन* हर जगह ज़हरीला और भ्रष्ट हो चुका है। मनुष्य उस समय से जब वह परमेश्वर के साथ चलता था कहां तक डूब गया था! अब तक उसमें *एक भी अच्छा विचार* नहीं था, क्योंकि "उनके मन के विचार

में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है'' (आयत 5)। उनकी भ्रष्ट अवस्था की एक बात ''हिंसा'' थी, जो हमेशा से नैतिक भ्रष्टता और आत्मिक पतन का संकेत रही है।

आज हमें देखकर मुझे लगता है कि परमेश्वर उतना ही नाराज होता होगा। यदि हिंसा मन की स्थिति को दर्शाती है, तो निश्चय ही आज बहुत से लोग बदनामी के इस घर में सजने की योग्यता पूरी करते हैं। हिंसा के अपराध जो आज हमें परेशान करते हैं भी एक कारण हो सकते हैं, जिनसे विश्वास की कमी, परमेश्वर और उसके वचन को भूलना होता है, जब तक हम नये नियम की मसीहियत के बड़े पैमाने पर फिर से आरम्भ होने में सफल नहीं होते तब तक हमारा संसार न्याय और आने वाले क्रोध की ओर ही देख सकता है।

नूह के समय में जब परमेश्वर ने बुराई के दृश्य को नीचे देखा तो बाइबल कहती है, ''और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ'' (उत्पत्ति 6:6)। परिणाम के रूप में संसार के विनाश का परमेश्वर का आदेश हो गया! ''तब यहोवा ने सोचा, कि मैं मनुष्य को जिसकी मैं ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा; क्या मनुष्य क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूं'' (उत्पत्ति 6:7)।

विनाश की घोषणा अचनाक या एक दम नहीं हुई थी। परमेश्वर के न्याय हमेशा उसकी दया और पवित्र आत्मा की विनतियों के बाद ही होते हैं। यहोवा की घोषणा कि ''मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा'' (उत्पत्ति 6:3) जहां तक हो सके मनुष्य के साथ परमेश्वर क धीरज को दिखाती है, परन्तु यह यह भाी दिखाती है कि उसके धीरज की एक *सीमा* है। परमेश्वर ने पाप और मनुष्य के पतन के साथ धीरज रखा था। उसने मन फिराव की प्रतीक्षा की थी, परन्तु मन फिराव नहीं हुआ! इसलिए परमेश्वर की विनती और चेतावनी के लिए उसके सच्चे न्याय को रास्ता देने का समय आ गया था। परमेश्वर आज भी मन फिराने की भरपूर अवसर देता है परन्तु यदि हम बार-बार उन अवसरों को ठुकराएं तो अन्त में हम पाएंगे कि दया का दरवाजा कसकर बन्द कर दिया गया है!

विश्वव्यापी दुष्टता के बीच *एक* आदमी भक्तिपूर्ण जीवन जीने का प्रयास कर रहा था। यह पता चलने पर कि परमेश्वर ने सब जीवित प्राणियों को नाश करने का मन बना लिया है, हम पढ़ते हैं कि ''यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही'' (उत्पत्ति 6:8)। शायद आप हैरान होंगे कि ''यदि नूह पर परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि *न* होती? यदि केवल एक धर्मी व्यक्ति *न* मिलता?'' निश्चय ही परमेश्वर सब प्राणियों को पृथ्वी पर से मिटा डालता और मनुष्यजाति जिसे आज हम देखते हैं, खत्म हो गई होती!

नूह पर परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि क्यों हुई? आयत 9 कहती है ''... नूह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ-साथ चलता रहा।'' हां एक व्यक्ति के परमेश्वर के साथ चलने में इतनी शक्ति है। लोग ऐसा आदमी जो परमेश्वर के साथ चलता था। इसलिए वह और उसका परिवार बचाए गए। उनके द्वारा पूरी मनुष्यजाति बचाई गई थी! इसी कारण नूह को ''वह आदमी जिसने मनुष्यजाति को बचाया'' माना जा सकता है।

नूह धर्म त्याग के युग में परमेश्वर का जन्म अर्थात एक वीर पुरुष था। एक के बाद एक वेदी चूर-चूर कर दी गई थी, परन्तु नूह के अन्दर की आग नहीं बुझी थी जब तक जल-प्रलय नहीं

आया। अकेले खड़े होने के लिए *साहस* की आवश्यकता होती है। नूह ने वहां अगुआई देने का साहस किया जहां कोई पीछे चलने की हिम्मत नहीं करता।

सही प्रकार का जीवन जीने के लिए *भी* साहस की आवश्यकता होती है। शायद इससे पहले मसीही लोगों के लिए कभी इतना कठिन समय नहीं रहा था। एक के बाद एक मानक को तोड़ दिया जाता है। नियम भंग कर दिए गए हैं और कइयों के लिए तो कुछ भी गलत नहीं है। निर्णय लेने में लगता है कि एक ही बात ध्यान में रखी जाती है कि ''क्या यह लाभदायक है ?'' एक पिता अपने पुत्र को बताता है, ''जाकर धन कमा। यदि ईमानदारी से कमा सकता है तो ठीक है, पर *धन कमा!*'' भौतिकवाद की जबर्दस्त तूफ़ानी लहर लोगों को धार्मिकता के मूल सिद्धान्तों से बहाकर ले जा रही है! सच्चाई के साथ इसके सच्च होने के कारण खड़े होने वाले और सच होने के कारण सच्चाई को पता चलेगा कि उन्हें जबर्दस्त *साहस* और *दृढ़ निश्चय* की आवश्यकता है क्योंकि उन्हें कई बार अकेले खड़े रहना पड़ेगा! अपने समय की दुष्टता के विपरीत नूह ने भक्तिपूर्ण जीवन और भक्तिपूर्ण घर का विरोध दर्ज कराया!

वह एक आज्ञाकारी व्यक्ति था

परमेश्वर ने नूह को स्वयं को और दूसरों को जो आने वाले बड़े जल-प्रलय ये बचाना चाहते थे, बचाने के लिए एक बड़ा जहाज़ बनाने की आज्ञा दी। परमेश्वर ने कहा:

> तब परमेश्वर ने नूह से कहा, सब प्राणियों के अन्त करने का प्रश्न मेरे साम्हने आ गया है; क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिये मैं उनको पृथ्वी समेत नाश कर डालूंगा। इसलिए तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज़ बना ले, ...(उत्पत्ति 6:13, 14)।

नूह की त्वरित आज्ञाकारित में हमें बाइबल में लिखित विश्वास के सबसे बड़े उदाहरणों में से एक मिलता है। आने वाली पीढ़ियों में इसे भुलाया नहीं गया क्योंकि परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक जिसने इब्रानियों 11 में अपनी कलम से विश्वास के नायकों का संसार के प्रसिद्ध लोगों की सबसे बड़ी जगह बनाई, ने नूह का नाम भी शामिल किया।

> विश्वास ही से नूह ने उस बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, चिनौती पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिए जहाज बनाया, और उसके द्वारा उसने संसार को दोषी ठहराया; और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है (आयत 7)।

नूह की त्वरित आज्ञापालन की इस गवाही में हमें कई शानदार सबक मिलते हैं। पहले तो हम देखते हैं कि नूह ने वह किया जो परमेश्वर ने उससे ''विश्वास से'' करने को कहा। उसने ऐसी जल-प्रलय जिसका वर्णन परमेश्वर ने किया, पहले कभी नहीं देखी थी। इसके अलावा जो काम परमेश्वर उसे करने के लिए दे रहा था, वह लगभग अतिमानवीय है। तौ भी नूह ने परमेश्वर की बात पर *विश्वास* किया। आज संसार की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक ऐसा विश्वास होना है जैसा नूह का था। हमें देखकर नहीं बल्कि *विश्वास* से चलने की आवयकता है। बेशक मैंने परमेश्वर, मसीह, पवित्र आत्मा, स्वर्ग या नरक को कभी नहीं देखा परन्तु *विश्वास से* मैं मानता

हूं कि वे हैं। हम में से किसी ने अभी मसीह के द्वितीय आगमन की गवाही नहीं दी जिसमें विनाश होगा; परन्तु यदि नूह की तरह हम बचाए गए हैं तो हमें नूह की तरह ही ''विश्वास से'' मानना आवश्यक है।

इब्रानियों 11:7 कहता है कि ''*विश्वास ही से* नूह ने ... जहाज़ बनाया।'' विश्वास *ही से,* नूह ने *आज्ञा मानी।* वास्तव में नूह ने अपनी आज्ञापालन से अपने विश्वास *को दिखाया।* यदि नूह यह कहता ''परमेश्वर ने कहा है कि जल-प्रलय आ रही है और मैं इसे मानता हूं'' परन्तु वह वैसे जहाज़ बनाने को नज़रअंदाज कर देता जैसे परमेश्वर ने उसे बनाने के लिए कहा है तो नूह भी दूसरे सब लोगों की तरह पानी में धो दिया जाता। मित्रो, परमेश्वर की नज़र में वही विश्वास ग्रहण योग्य है जो हमें वह करने के लिए विवश करता है जिसकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है यानी ऐसा विश्वास जिसकी बात पौलुस ने कही है ''विश्वास जो प्रेम के द्वारा *प्रभाव डालता* है'' (गलातियों 5:6)। जैसा याकूब ने कहा:

> वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। ... सो तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, बरन कर्मों से भी धर्मी ठहरता है। ... निदान, जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है (याकूब 2:17-26)।

इसके अलावा नूह ने *बिल्कुल* वही किया जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए कहा। उसने परमेश्वर को कोई सुझाव नहीं दिया कि जहाज़ में सुधार कैसे किया जा सकता है। उसने संसार को बचाने को कोई बेहतर ढंग नहीं सुझाया। इस बात को समझते हुए कि परमेश्वर उससे बेहतर जानता है उसने वही किया जो परमेश्वर ने कहा था। बाइबल दो बार कहती है कि ''नूह ने किया ...'' (उत्पत्ति 6:22; 7:5)। आज हमें इसी सबक की आवश्यकता है। लोगों ने परमेश्वर की कलीसिया, उद्धार की परमेश्वर की योजना और आराधना के लिए परमेश्वर के ढंग में कई ''सुधार'' कर लिए हैं। जिस कारण *परमेश्वर* की कही बात में लोगों की दिलचस्पी कम होने के साथ-साथ आम लोगों में उलझन और फूट पड़ गई है। परमेश्वर खुश नहीं है! नूह इसलिए बचाया गया था क्योंकि उसने वही *किया* जो परमेश्वर ने उसे अपने विचार जोड़े बिना करने के लिए कहा था। और मेरा और आपका उद्धार भी ऐसे ही होगा।

वह एक साहसी व्यक्ति था

मुझे यकीन है कि नूह के साथ मज़ाक किया गया होगा। मैं नूह को बड़ा जहाज़ बनाते देखने वालों को हंसते और मज़ाक उड़ातेसुन सकता हूं। ''बूढ़ा नूह पागल हो गया है! वह कहता है कि बारशि होने वाली है। वह तो यह भी कहता है कि 'प्रलय' आने वाली है। कभी किसी ने ऐसी बात सुनी है? वह कहता है कि प्रलय से पृथ्वी नष्ट हो जाएगी! क्या परमेश्वर ने पृथ्वी को कभी नष्ट किया है!'' फिर वे सिर मारते हुए वहां से चल देते होंगे। कइयों का मानना था कि अदन की वाटिका के पत्ते कभी ओस से गीले नहीं हुए थे। हां नूह का मज़ाक उड़ाया जाता और गालियां मिलनी थीं।

सदियों बाद पतरस ने उस संशयवाद और मज़ाक की बात की। उसने लिखा कि परमेश्वर के

आने वाले दिन के बारे में भी लोग ऐसी ही बातें कहेंगे। पतरस को मालूम था कि मज़ाक करने वाले यह कहने लगेंगे कि "उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई? क्योंकि जब से बाप दादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है, जैसा सृष्टि के आरम्भ में था?" (2 पतरस 3:4)। पृथ्वी के पहले कभी जल से नष्ट न होने के कारण जैसे पुराने समय के लोग ठट्ठा करते थे, वैसे ही बाद के समयों में अविश्वासियों ने कहना था कि संसार पहले कभी आग से नष्ट नहीं हुआ। परतस ने आगे कहा कि वे कुछ भूल रहे थे!

> वे तो जान बूझकर यह भूल गए, कि परमेश्वर के वचन के द्वारा से आकाश प्राचीन काल से वर्तमान है और पृथ्वी भी जल में से बनी और जल में स्थिर है। इन्हीं के द्वारा उस युग का जगत जल में डूब कर नाश हो गया। पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिए रखे हैं, कि जलाए जाएं; और वह भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नाश होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे (2 पतरस 3:5–7)।

मसीह के ने भी लोगों के अविश्वास की तुलना उन लोगों के अविश्वास की बड़ी घटना से की जो जहाज़ के बनाए जाने के समय नूह पर हंसते थे:

> जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उन में ब्याह शादी होती थी। और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उन को कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा (मत्ती 24:37–39)।

नूह में वह साहस था, जिससे वह अपने ऊपर हंसने वालों की बातें सह पाया। आज जो लोग परमेश्वर की योजना के अनुसार जीना और परमेश्वर की योजना के अनुसार उद्धार पाना चाहते हैं, उन्हें ऐसे मज़ाक को सहने के लिए तैयार रहना चाहिए। परन्तु इस पर ध्यान दें: नूह जब जहाज़ बना रहा था तो बहुत से *लोग उस पर हंसते थे, परन्तु जब प्रलय का पानी चढ़ गया और पृथ्वी अपनी मूल अवस्था में आ गई तो कोई उस पर नहीं हंसा!* सचमुच में "अपनी मृत्यु पर हंस रहे" मज़ाक करने वाले संसार के लिए यह कितनी बड़ी चेतावनी है। पतरस ने विचार करने योग्य यह सच्चाई बताई:

> क्योंकि जब परमेश्वर ने ... प्रथम युग के संसार को भी न छोड़ा, वरन भक्तिहीन संसार पर महा जल-प्रलय भेजकर धर्म के प्रचारक नूह समेत आठ व्यक्तियों को बचा लिया। ... तो प्रभु भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है (2 पतरस 2:4–9)।

वह रहमदिल आदमी था

परमेश्वर लोगों का नाश नहीं चाहता था। यदि वे केवल उसकी ओर लौट ही आते तो उन्हें बचाया जा सकता था। परमेश्वर द्वारा लोगों को अपनी नज़दीकी में लाने का एक ढंग नूह के द्वारा

था। 2 पतरस 2:5 के अनुसार वह ''धर्म का प्रचारक'' था।

नूह ने कम से कम दो तरह से प्रचार किया होगा: अपने जीवन से और अपने कामों के द्वारा! जहाज़ बनाकर नूह ने बढ़ई के काम से थोड़ा अधिक किया। उसका डॉकयार्ड (जहाज़ के निर्माण व मरम्मत का स्थान) उसका पुलपिट था और हथौड़े की गोलाई उसकी आवाज़ थी। उसने कई दिनों, कई हफ्तों, कई महीनों और कई वर्षों तक काम किया। कुल्हाड़ी के हर वार, हथौड़े की हर चोट, आरी के हर कट में एक सबक था, जो वह अपने साथी को देना चाहता था; क्योंकि हर प्रयास यह संकेत देता था कि उसे परमेश्वर में विश्वास है, उसकी शक्ति में विश्वास है, और यह कि जहाज़ बनाने की आज्ञा देने से परमेश्वर का क्या अर्थ था। केवल अपने बचाए जाने की ही नहीं, बल्कि दूसरों की आत्माओं में दिलचस्पी लेने के कारण नूह ने लोगों को बार-बार मन फिराने के लिए कहा होगा।

आज हमें ऐसे ही ''धर्म के प्रचारकों'' की आवश्यकता है! बहुत से लोग जो अपने आप को मसीही कहलाते हैं अपनी ही आत्माओं में इतनी दिलचस्पी नहीं लेते कि दूसरों की आत्माओं की चिन्ता करने वाले धर्म के प्रचारक बनें। उनके जीवनों में या उनकी बातों में परमेश्वर दिखाई नहीं देता। दूसरों की आत्माओं के लिए सक्रिय चिन्ता की आवश्यकता अधिक नहीं होती, परन्तु ऐसा लगता है कि कलीसिया से उदासीनता की लहर टकरा गई है। बिना दिल के कलीसिया बिना आशा केसंसार जैसी ही है! यदि हम दूसरों की आत्माओं में सचमुच दिलचस्पी लेते *हैं* तो हम नूह की तरह ''धर्म के प्रचारक'' बनेंगे।

इबानियों 11:7 कहता है कि अपने प्रचार से नूह ने ''संसार को दोषी ठहराया।'' यह कैसे हुआ? *संसार ने इसे ठुकरा दिया!* क्या आपने कभी रुककर यह सोचा है कि वही सुसमाचार जो संसार को बचाता है संसार को दोषी भी ठहराता है? मसीह ने कहा:

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वाास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जागत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 3:16-18)।

परमेश्वर जब भी कोई आज्ञा देता है उसमें दोहरी प्रतिज्ञा जुड़ी होती है। यानी आज्ञाकारिता के लिए आशीष देने की प्रतिज्ञा और आज्ञा न मानने के लिए दोषी ठहराने की प्रतिज्ञा। आज जब हम सच्चाई का प्रचार करते हैं तो आज्ञा न मानने वाले लोगों को दोषी ठहराया जाता है और आज्ञा मानने वालों को आशीष मिलती है। जब आप किसी सुसमाचार प्रचारक से आपको विश्वास करने, मन फिराने, अंगीकार करने और बपतिस्मा लेने का आग्रह करते सुनते हैं, और आप उसके पूरे संदेश या उसके कुछ भाग को ठुकराते हैं तो वास्तव में आप अपने आप को दोषी ठहरा रहे होते हैं! नूह ने ऐसे ही संसार को दोषी ठहराया क्योंकि उन्होंने उसकी शिक्षा को नकार दिया था।

एक अर्थ में नूह बहुत सफल प्रचारक नहीं था। वह अधिक से अधिक सात लोगों को बचा

पाया था, जिसमें अपने आपको डालकर कुल *आठ* लोग बचे थे! पानी में से केवल आठ लोग सुरक्षित बचे थे (1 पतरस 3:20)। आठ लोगों का समूह बहुत छोटा है। *मनुष्यजाति की पूरी नस्ल* में से आठ लोगों पर विचार करें। परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से संसार को फिर से भरने और मनुष्यजाति को एक नई शुरुआत देने के लिए ये आठ ही काफी थे। ईमानदारी से किया गया प्रचार अवश्य परिणाम देता है; थोड़े लोगों का बचाया जाना, परमेश्वर के मानकों से सफल होता है।

वह कृतज्ञ आदमी था

अन्त में वह समय आ गया, जब जहाज़ बनाने का काम पूरा हो गया तो नूह अपने परिवार के साथ जहाज़ के दरवाजे में से गया और ''यहोवा ने जहाज़ का द्वार बन्द कर दिया'' (उत्पत्ति 7:16)।

परमेश्वर ने धीरे से प्रतीक्षा की थी। लोगों ने मन नहीं फिराया था। अब सच्चे न्याय का समय था! हम पढ़ते हैं कि ''... बड़े गहिरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और आकाश के झरोखे खुल गए। और वर्षा चालीस दिन और चालीस रात निरन्तर पृथ्वी पर होती रही'' (उत्पत्ति 7:11, 12)।

संसार की अधिकतर जातियों में एक विपत्ति का परम्परागत विचार पाया जाता है, जो जल-प्रलय के द्वारा मानवीय परिवार पर आ पड़ा था। बड़े जल-प्रलय से बढ़कर परमेश्वर के पास इतना शक्तिशाली, इतना भयदायक न्याय का कोई और साधन नहीं था। इस बड़ी विपत्ति को आंखों के सामने लाने की कोशिश करते हुए 1888 में पिटसबर्ग, पैनसिलवेनिया के निकट जॉनस्टाउन में आई बाढ़ पर ध्यान किया जा सकता है, जिसमें भंवर अर्थात बाढ़ के खतरनाक पानी में दस हज़ार लोग नष्ट हो गए थे। यह बाढ़ तो खतरनाक थी ही पर नूह के समय की विपत्ति इससे कहीं खतरनाक थी। उस घटना के कलाकारों के चित्रों से पता चलता है कि नष्ट हो रहे लोगों और पशुओं का दु:ख और वेदना कितनी अधिक थी। कवियों और लेखकों द्वारा नाटकीय शब्द लिखे गए हैं परन्तु वह प्रलय इतनी बड़ी, इतनी विशाल, इतनी भयंकर थी कि उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। बाइबल की तरह हम भी इसे इतना कह कर छोड़ देते हैं:

> और जल पृथ्वी पर अत्यन्त बढ़ गया, यहां तक कि सारी धरती पर जितने बड़े बड़े पहाड़ थे, सब डूब गए। जल तो पन्द्रह हाथ ऊपर बढ़ गया, और पहाड़ भी डूब गए और क्या पक्षी, क्या घरेलू पशु, क्या बनैले पशु, और पृथ्वी पर सब चलने वाले प्राणी, और जितने जन्तु पृथ्वी मैं बहुतायत से भर गए थे, वे सब, और सब मनुष्य मर गए। जो जो स्थल पर थे उन में से जितनों के नथनों में जीवन का श्वास था, सब मर मिटे (उत्पत्ति 7:19-22)।

मृत्यु! मृत्यु! मृत्यु! प्रलय का परिणाम विश्वव्यापी मृत्यु था। केवल नूह और उसका परिवार ही जीवित बचे। क्यों? क्योंकि नूह ने वही किया था जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा था।

अन्तत: प्रलय खत्म हो गई। यह जानने के लिए ललायित कि संसार की स्थिति कैसी है, नूह ने एक कौआ भेजा। यह अशुद्ध पक्षी अर्थात वह प्रजाति जो मांस खा सकती है, वापस नहीं आया। फिर नूह ने एक फाख़ता भेजी, ''उस कबूतरी को अपने पैर के तले टेकने के लिए कोई आधार न मिला, सो वह उसके पास जहाज़ में लौट आई ...'' (उत्पत्ति 8:9)। नूह ने जब दूसरी बार

फ़ाख़ता भेजी तो वह मुंह में अंजीर का पत्ता लेकर वापस आ गई। इससे नूह को पता चल गया कि प्रलय खत्म हो गई है और पानी उतर रहा है। इसमें नूह धीरज और सब्र का एक नमूना है। पहली बार फ़ाख़ता को भेजकर उसने बस नहीं की। इसके बजाय उसने परों वाले अपने जासूसों को भेजना जारी रखा जब तक उसे परमेश्वर से वह उत्तर नहीं मिल गया जो वह चाहता था। हम में से अधिकतर लोग बड़ी जल्दी निराश हो जाते हैं। हम मसीही जीवन जीने, बाइबल को पढ़ने और समझने या निजी काम करने के कुछ प्रयास करते हैं। हम जल्द थक जाते हैं। हमें नूह जैसा बनने की आवश्यकता है, जिसने छोड़ा नहीं!

जब प्रलय का पानी उतरा, तो संसार को एक नई शुरुआत दी गई। जैसी शुरुआत नूह ने की उसे अच्छे ढंग से नई शुरुआत की मैं कल्पना नहीं कर सकता। "तब नूह ने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई; ... वेदी पर होमबलि चढ़ाया" (उत्पत्ति 8:20)। परमेश्वर ने इस बलिदान को स्वीकार कर लिया और अदभुत प्रतिज्ञा की कि मानवीय परिवार इस भरोसे से बोने और काटने के लिए जा सकता है कि ऐसा विश्वव्यापी विनाश फिर दोबारा कभी नहीं होगा। परमेश्वर ने नूह को बताया, "अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएंगे" (उत्पत्ति 8:22)।

इस वाचा का चिह्न जो परमेश्वर ने नूह के साथ बान्धी थी, धनक है। निश्चय ही धनक प्रकृति के सबसे सुन्दर दृश्यों में से एक है। मुझे यकीन है कि आकाश में स्वर्ग और पृथ्वी को मिलाते हुए बना धनुष देखने के लिए सब लोग चकित होकर खड़े हो जाते हैं। परन्तु मैं आपको यह याद दिलाना चाहता हूं कि धनक जल-प्रलय के बाद आई, जैसे आज भी बारिश के बाद ही आती है। धनक बिना बादल के या बिना बारिश के दिनों में दिखाई नहीं देती। इसी प्रकार परमेश्वर के अनुग्रह की धनक अधिकतर विपत्ति, क्लेश और परीक्षा के बाद ही दिखाई देती है!

सारांश

फिर यहां "वह आदमी जिसने मनुष्यजाति को बचाया" की कहानी है। हम नूह के जीवन के अन्तिम दृश्य अर्थात निर्बलता के उस क्षण पर दया का वस्त्र डालेंगे (उत्पत्ति 9:20-23)। हम आज भी यही कहेंगे कि "नूह के जैसे समार्थी बनो न कि उसके जैसे कमज़ोर।"

नूह से हम कई सबक ले सकते हैं, परन्तु विशेषकर हमें यह सीखना आवश्यक है कि वह परमेश्वर ने उसे बचाया, क्योंकि उसने *वही किया* जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा था। आज हमारा बचाया जाना या उद्धार 1 पतरस 3:20, 21 में नूह के बचाए जाने जैसा ही है:

> ... जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर क मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।

नूह ने जहाज़ में से एक नये संसार, ताज़गी, शुद्धता और सफाई में कदम रखा। वैसे ही मसीह

में *विश्वास करके,* अपने पापों से *मन फिराकर,* उसके नाम का *अंगीकार करके,* और पापों की क्षमा के लिए *बपतिस्मे में* गाड़े जाकर एक नये जीवन में आते, परमेश्वर के हाथ से धोए जाते हैं!

एक और सच्चाई याद रखें कि जो लोग नाश हुए थे वे वह लोग थे जिन्होंने तैयारी नहीं की थी। मुझे यकीन है जब पानी चढ़ रहे थे, *तो* उन्होंने तैयारी करनी चाही होगी, परन्तु *तब* दरवाजा बन्द हो चुका था। इसी प्रकार आज बहुत से लोग सुसमाचार की आज्ञा मानना टाल रहे हैं। एक दिन बहुत देर हो चुकी होगी! परतस ने कहा:

> प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; बरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे (2 पतरस 3:9, 10)।

टालें न। मज़ाक न उड़ाए। अपने आपको प्रभु की आज्ञा मानने के लिए दे दें।

सीखने के लिए सबकः
परमेश्वर के वफ़ादार बनो, आपके आस-पास के लोगों का जीवन चाहे जैसा भी हो।

टिप्पणी

[1]इस पाठ का शीर्षक और अधिकतर सामग्री क्लेरेंस मेकार्टनी, *सर्मन्स ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट हीरोज़* (न्यू यॉर्क: अब्रिग्डन प्रेस, 1935), 9–20 से ली गई है।

सुलैमान

सबसे बुद्धिमान और सबसे मूर्ख व्यक्ति

वचन पाठः 1 राजाओं 3:3–11:43

टैहलिकाह, ओक्लाहोमा में 1961 में मैंने एक मनोवैज्ञानिक को ''बचाव के उपायों'' की बात करते हुए सुना। चिताओं से थोड़ी देर के छुटकारे के लिए हम में से सब लोग कुछ सीमा तक इन ढंगों का इस्तेमाल करते हैं। वक्ता ने कुछ उपाय बताए, जैसे औचित्य स्थापित, दमन, रोध, उलट दिशा में अति प्रतिक्रिया, इनकार आदि। एक तो विशेषकर सुलैमान की सोच का वर्णन करता प्रतीत होता है। मनोवैज्ञानिक ने बचाव के इस ढंग को ''तर्क की किस्म का विभागीकरण'' का नाम दिया है। उसने कहा कि कई बार लोग ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे उनके दिमाग में दो खाने हों, जिनमें से हर एक के अपने मूल्य हों, सम्भवतया जो दोनों एक-दूसरे की सोच से अलग हों। उसने कहा कि कइयों के लिए यह आवश्यक हैं क्योंकि वे दो अलग तरह की सोच के साथ रहना चाहते हैं। उदाहरण के रूप में उसने उस व्यक्ति की ओर ध्यान दिलाया जो कहता है कि उसका विश्वास लोकतन्त्र और समान अधिकारों में हैं परन्तु वह जाति-पाति में भी विश्वास रखता है। ऐसे व्यक्ति का एक और उदाहरण है कि जिसका विश्वास है कि धर्म और व्यापार को मिलाया नहीं जाना चाहिए। रविवार के दिन अपने धार्मिक विश्वासों में वह ईमानदार और गम्भीर है (जहां तक उसकी बात है), परन्तु सप्ताह के दूसरे दिनों में अपने कारोबार में वह बेईमानी करता है। मनोवैज्ञानिक ने कहा कि एक महत्वपूर्ण तथ्य याद रखने वाला है कि ऐसा व्यक्ति अपने कामों और व्यवहारों में मेल न खाने से अनभिज्ञ है। स्पष्टतया सुलैमान की यही समस्या थी।

बाइबल में सुलैमान को सबसे बुद्धिमान और सबसे मूर्ख व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। ऐसा लगता है जैसे सुलैमान के दिमाग में दो बिल्कुल अलग और मेल न खाते खाने *थे*/एक तो बहुत बुद्धिमान था, जो अपनी प्रजा को सलाह देने के लिए रखा गया था, जबकि दूसरा बिल्कुल मूर्ख था, जिसका इस्तेमाल व्यक्गित निर्णय लेने के लिए किया जाता था।

सुलैमान के जीवन में *मतभेद* मिलते हैं। उसका आरम्भ बहुत शानदार था। उसके माता-पिता दाऊद और बतशेबा, जिन्होंने पाप के कारण पहले एक पुत्र खो दिया था, उसके जन्म पर बड़ी शुक्रगुजारी की थी। दाऊद ने उसका नाम शान्तिपूर्ण शासन की इच्छा व्यक्त करते हुए ''सुलैमान'' या ''शान्तिपूर्ण'' रखा था। परमेश्वर ने उसे इससे भी ऊंचा नाम ''यदिद्याह'' रखा जिसका मूल अर्थ ''परमेश्वर को प्रिय'' है। वह मूल में ''लोगों का प्रिय'' था और अपने पिता की मृत्यु के समय जब वह अठारह से भी कम वर्ष का था, सिंहासन पर बैठा। वह शुद्ध से शुद्ध और होनहार जवानों में से एक था, जिनकी कल्पना की जा सकती है। परन्तु जब हम केवल चालीस वर्ष बाद

देखते हैं, तो हम पाते हैं कि हम साठ से भी कम वर्ष की आयु में शरीर में कामुक हुए और साम्राज्य द्वारा परेशान वह पतन के निकट था। हमारे लिए सबक सुलैमान के जीवन से मिल सकते हैं।

सबसे बुद्धिमान व्यक्ति

1 राजाओं के आरम्भिक पाठों में देखते हुए हमे सुलैमान की बुद्धि के कई प्रमाण मिलते हैं:

पहला, सुलैमान की आरम्भिक पसन्दें बुद्धिमानी की थीं। राजा के रूप में उसके आरम्भिक कार्यों में से एक गिबोन के ऊंचे स्थान पर जाना था, जहां तम्बू अभी भी था। वहां उसने मूसा की वेदी पर एक हज़ार होम बलियां दीं। जब वह वहीं पर था तो परमेश्वर ने उसे रात को दर्शन दिया। उसने कहा, ''जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूं, वह मांग'' (1 राजाओं 3:5)।

यदि आप को इतनी छूट दी जाती तो *आप* क्या मांगते? लम्बी आयु? धन? महिमा? सुलैमान ने *बुद्धि* मांगी:

> सुलैमान ने कहा, ... और अब हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तूने अपने दास को मेरे पिता दाऊद के स्थान पर राजा किया है, परन्तु मैं छोटा लड़का सा हूं, जो भीतर-बाहर आना-जाना नहीं जानता। फिर तेरा दास तेरी चुनी हुई प्रजा के बहुत से लोगों के मध्य में है, जिनकी गिनती बहुतायत के मारे नहीं हो सकती। तू अपने दास को अपनी प्रजा का न्याय करने के लिए समझने की ऐसी शक्ति दे, कि मैं भले-बुरे को परख सकूं; क्योंकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके? (1 राजाओं 3:6-9)।

जवानो, मेरी बात ध्यान से सुनो, आप के लक्ष्य और आप के निशाने मुख्यतया इस पर निर्भर होंगे कि आप क्या हैं और आप जीवन में क्या बनते हैं। भौतिक वस्तुओं के बजाय जो सचमुच महत्वपूर्ण है, अर्थात मसीही व्यवहार, ईमानदारी और अच्छा नाम पाने की कोशिश करें। सुलैमान ने बुद्धि की आशीष पाना चुना, इसलिए उसे इसके साथ दूसरी आशिषें भी मिल गईं:

> इस बात से प्रभु प्रसन्न हुआ कि सुलैमान ने ऐसा वरदान मांगा है। तब परमेश्वर ने उस से कहा, इसलिए कि तू ने यह वरदान मांगा है, और न तो दीर्घायु और न धन और न अपने शत्रुओं का नाश मांगा है, परन्तु समझने के विवेक का वरदान मांगा है इसलिए सुन, मैं तेरे वचन के अनुसार करता हूं, तुझे बुद्धि और विवेक से भरा मन देता हूं, यहां तक कि तेरे समान न तो तुझ से पहिले कोई कभी हुआ, और न बाद में कोई कभी होगा। फिर जो तू ने नहीं मांगा, अर्थात् धन और महिमा, वह भी मैं तुझे यहां तक देता हूं कि तेरे जीवन भर कोई राजा तेरे तुल्य न होगा। फिर यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं मेरे मार्ग में चलता हुआ, मेरी विधियों और आज्ञाओं को मानता रहेगा तो मैं तेरी आयु को बढ़ाऊंगा (1 राजाओं 3:10-14)।

कई साल पहले जब राजकुमारी विक्टोरिया इंग्लैंड की रानी बनी तो लॉर्ड मेलबोर्न ने बाइबल खोल कर उस जवान रानी के लिए सुलैमान के फैसले वाली कहानी पढ़ी। कितना अच्छा हो यदि हर जन अधिकारी का सपना सुलैमान जैसा हो और वह ऐसे निर्णय लेने वाला हो!

दूसरा, दूसरों के साथ व्यवहार में सुलैमान बुद्धिमान था। बाइबल से बाहर की परम्परा से उसकी बुद्धि के कई उदाहरण दिए जाते हैं। एक कहानी उस समय की है जब शीबा की रानी सुलैमान उससे भेंट के लिए आई तो अपने साथ उसे देने के लिए फूलों के दो गुलदस्ते ले आई। एक असली था; दूसरा नकली, जिसे उसने कारीगर को उस अवसर के लिए बनाने की आज्ञा दी थी। यह इतना बढ़िया था कि दोनों में से पहचान पाना कठिन था कि नकली कौन सा है और असली कौन सा। सुलैमान की बुद्धि को परखने के लिए उसने उसे असली फूल देख कर रख लेने की चुनौती दी। एक पल के लिए उलझन में पड़े राजा का ध्यान महल के बाहर मधुमक्खियों के छत्ते पर पड़ा। एक सेवक को उसने आज्ञा दी कि "खिड़की खोल दी जाए।" मधुमक्खियां अन्दर आ गईं और ताजा फूलों पर मण्डराने लगीं, जिस से सुलैमान की चतुराई का पता चला। कहानी के अनुसार शीबा की रानी सुलैमान की बुद्धि से बहुत प्रभावित हुई (1 राजाओं 10:7)।

बाइबल हमें सुलैमान की बुद्धि का केवल एक उदाहरण देती है, जो स्वपन के थोड़ी देर बाद घटी घटना है:

> उस समय दो वेश्याएं राजा के पास आकर उसके सम्मुख खड़ी हुईं। उन में से एक स्त्री कहने लगी, हे मेरे प्रभु! मैं और यह स्त्री दोनों एक ही घर में रहती हैं; और इसके संग घर में रहते हुए मेरे एक बच्चा हुआ। फिर मेरे जच्चा के तीन दिन के बाद ऐसा हुआ कि यह स्त्री भी जच्चा हो गई; हम तो संग ही संग थीं, हम दोनों को छोड़कर घर में और कोई भी न था। और रात में इस स्त्री का बालक इसके नीचे दबकर मर गया। तब इस ने आधी रात को उठकर, जब तेरी दासी सो ही रही थी, तब मेरा लड़का मेरे पास से लेकर अपनी छाती पर रखा, और अपना मरा हुआ बालक मेरी छाती पर लिटा दिया। भोर को जब मैं अपने बालक को दूध पिलाने को उठी, तब उसे मरा हुआ पाया; परन्तु भोर को मैं ने ध्यान से यह देखा, कि वह मेरा पुत्र नहीं है। तब दूसरी स्त्री ने कहा, नहीं जीवित पुत्र मेरा है, और मरा पुत्र तेरा है। परन्तु वह कहती रही, नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र है और जीवित मेरा पुत्र है, यों वे राजा के सामने बातें करती रही (1 राजाओं 3:16-22)।

आज कोई जज ऐसे फैसले को सम्भवतया सबूत की कमी के कारण छोड़ देगा, परन्तु सुलैमान की बुद्धि की प्रतिक्रिया अद्‌भुत थी:

> फिर राजा ने कहा, मेरे पास तलवार ले आओ; सो एक तलवार राजा के सामने लाई गई। तब राजा बोला, जीविते बालक को दो टुकड़े करके आधा इसको और आधा उसको दो। तब जीवित बालक की माता का मन अपने बेटे के स्नेह से भर आया, और उस ने राजा से कहा, हे मेरे प्रभु ! जीवित बालक उसी को दे; परन्तु उसको किसी भांति न मार। दूसरी स्त्री ने कहा, वह न तो मेरा हो और न तेरा, वह दो टुकड़े किया जाए। तब राजा ने कहा, पहिली को जीवित बालक दो; किसी भांति उसको न मारो; क्योंकि उसकी माता वही है (1 राजाओं 3:24-27)।

इस निर्णय के कारण हम पढ़ते हैं कि "जो न्याय राजा ने चुकाया था, उसका समाचार समस्त

इस्राएल को मिला, और उन्होंने राजा का भय माना, क्योंकि उन्होंने यह देखा, कि उसके मन में न्याय करने के लिये परमेश्वर की बुद्धि है'' (1 राजाओं 3:28)।

तीसरा, सुलैमान दूसरों को सिखाने में बुद्धिमान था। वह उसका पितामह था जिसे हम ''बुद्धि साहित्य'' कहते हैं। हमें बताया गया है:

> और परमेश्वर ने सुलैमान को बुद्धि दी, और उसकी समझ बहुत ही बढ़ाई, और उसके हृदय में समुद्र तट की बालू के किनकों के तुल्य अनगिनित गुण दिए। और सुलैमान की बुद्धि पूर्व देश के सब निवासियों और मिस्रियों की भी बुद्धि से बढ़कर बुद्धि थी। वह तो और सब मनुष्यों से ... अधिक बुद्धिमान था और उसकी कीर्ति चारों ओर की सब जातियों में फैल गई (1 राजाओं 4:29-31)।

बाइबल बताती है कि सुलैमान ने ''3000 नीतिवचन कहे और उसके 1005 गीत भी हैं'' (1 राजाओं 4:32)। इन तीन हज़ार नीतिवचनों में से केवल एक तिहाई ही सम्भाले गए हैं, परन्तु हममें से कइयों ने नीचे दिए गए नीतिवचनों में से कई आमतौर पर सुने हैं:

> लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिस में उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उस से न हटेगा (नीतिवचन 22:6)।
>
> लड़के की ताड़ना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा (नीतिवचन 23:13)।
>
> बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चान्दी से औरों की प्रसन्नता उत्तम है (नीतिवचन 22:1)।
>
> जो झट क्रोध करे, वह मूढ़ता का काम भी करेगा, ... (नीतिवचन 14:17)।
>
> हे आलसी, च्यूंटियों के पास जा; उनके काम पर ध्यान दे, और बुद्धिमान हो (नीतिवचन 6:6)।
>
> मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है (नीतिवचन 18:24)।

सुलैमान के 1,005 गीत इतने प्रसिद्ध नहीं हैं, परन्तु एक नमूना भजन संहिता 127 है। 1 और 2 आयतों पर ध्यान दें:

> यदि घर को यहोवा न बनाए, तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ होगा। यदि नगर की रक्षा यहोवा न करे, तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा। तुम जो सवेरे उठते और देर करके विश्राम करते और दु:ख भरी रोटी खाते हो, यह सब तुम्हारे लिये व्यर्थ ही है; क्योंकि

वह अपने प्रियों को योंही नींद दान करता है।

कुल मिला कर भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक और सुलैमान के गीत के अलावा पुराने नियम में सुलैमान की तीन किताबें हैं। उसने वनविद्या और पशुपालन पर भी लिखा (1 राजाओं 4:33, 34)।

चौथा वह परमेश्वर की महिमा करने में बुद्धिमान था। सुलैमान को वह बड़ा मन्दिर बनवाने के लिए याद रखा जाएगा, जिसमें परमेश्वर का नाम रखा जाना था। यह उसके पिता दाऊद का सपना था; परन्तु उसे परमेश्वर का मन्दिर बनाने की अनुमति नहीं दी गई क्योंकि उसने बहुत लहू बहाया था। इस कारण यह काम सुलैमान को सौंपा गया। यह एक बहुत बड़ी कोशिश थी। तीस हज़ार इस्राएलियों का इस्तेमाल किया गया और 1,50,000 कनानियों से यह सेवा करवाई गई। असंख्य बहुमूल्य धातु और पत्थर इस काम में लगाए गए। इमारत बनाने की शायद सबसे विशेष बात 1 राजाओं 6:7 में देखी जाती है कि "बनते समय भवन ऐसे पत्थरों का बनाया गया, जो वहां ले आने से पहिले गढ़कर ठीक किए गए थे, और भवन के बनते समय हथौड़े वसूली या और किसी प्रकार के लोहे के औज़ार का शब्द कभी सुनाई नहीं पड़ा।"

अन्त में सात साल बाद मन्दिर तैयार हुआ। मन्दिर के अर्पण किए जाने का वर्णन 1 राजाओं 9 और 1 इतिहास 5 में मिलता है। इस अवसर पर सुलैमान ने लोगों में संदेश दिया *और परमेश्वर की महिमा ने मन्दिर को भर दिया।* यहां हमें सुलैमान के जीवन का चरम मिलता है। परन्तु इस शिखर से हमें उस का जो आने वाला था, संकेत भी मिलता है। परमेश्वर ने फिर सुलैमान को दर्शन दिया और कहा:

> जो प्रार्थना गिड़गिड़ाहट के साथ तू ने मुझ से की है, उसको मैं ने सुना है, यह जो भवन तू ने बनाया है, उस में मैं ने अपना नाम सदा के लिए रखकर उसे पवित्र किया है; और मेरी आंखें और मेरा मन नित्य वहीं लगे रहेंगे। और यदि तू अपने पिता दाऊद की नाईं मन की खराई और सिधाई से अपने को मेरे सामने जानकर चलता रहे, और मेरी सब आज्ञाओं के अनुसार किया करे, और मेरी विधियों और नियमों को मानता रहे, तो मैं तेरा राज्य इस्राएल के ऊपर सदा के लिए स्थिर करूंगा; ... परन्तु यदि तुम लोग या तुम्हारे वंश के लोग मेरे पीछे चलना छोड़ दें; और मेरी उन आज्ञाओं और विधियों को, जो मैं ने तुम को दी हैं, न मानें, और जाकर पराये देवताओं की उपासना करें और उन्हें दण्डवत करने लगें, तो मैं इस्राएल को इस देश में से जो मैं ने उनको दिया है, काट डालूंगा और इस भवन को जो मैं ने अपने नाम के लिए पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से उतार दूंगा; और सब देशों के लोगों में इस्राएल की उपमा दी जाएगी और उसका दृष्टांत चलेगा। और यह भवन जो ऊंचे पर रहेगा, तो जो कोई इसके पास होकर चलेगा, वह चकित होगा, और ताली बजाएगा और वे पूछेंगे, कि यहोवा ने इस देश और इस भवन के साथ क्यों ऐसा किया है; तब लोग कहेंगे, कि उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को जो उनके पुरखाओं को मिस्र देश से निकाल लाया था तजकर पराये देवताओं को पकड़ लिया, और उनको दण्डवत की और उनकी उपासना की। इस कारण यहोवा ने यह सब विपत्ति उन पर डाल दी (1 राजाओं 9:3-9)।

परमेश्वर सुलैमान और इस्राएल के लोगों को बता रहा था कि "यदि तुम मुकर गए तो तुम्हारा गिरना भी तुम्हारे उठने की तरह ही बड़ा होगा।"

संक्षेप में *सुलैमान उन सब बातों में बुद्धिमान था जिनमें उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी।* परिणाम स्वरूप उसका प्रताप बढ़ा। उसका राज्य ऐसा था कि जब शीबा की रानी आई तो उसने कहा था, "... जब तक मैं ने आप ही आकर अपनी आंखों से यह न देखा, तब तक मैं ने उन बातों की प्रतीति न की, परन्तु इसका आधा भी मुझे न बताया गया था; तेरी बुद्धिमानी और कल्याण उस कीर्ति से भी बढ़कर है, जो मैं ने सुनी थी" (1 राजाओं 10:7)।

अलैग्ज़ैंडर व्हाईट ने लिखा है:

> यदि कभी किसी संत ने परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज की और ये सब चीज़ें उसे मिल गईं तो वह सुलैमान था ... यदि किसी के बारे में कहा जा सकता है कि वह पहले से सिद्ध था और उसने सिद्धता पाई तो वह सुलैमान था। ... जीवन के सागर में हर व्यक्ति को सावधान करने और सिखाने के लिए यदि कोई लाइटहाउस था तो वह सुलैमान है। ... यदि कभी किसी बच्चे के जन्म पर यह कहा गया कि "जहां पाप अधिक हुआ वहां अनुग्रह उससे भी बढ़ कर हुआ," तो यह निश्चय ही सुलैमान के जन्म और जन्म के अधिकारों और अनुग्रहों पर था।

सब से मूर्ख व्यक्ति

इस गौरवमयी आरम्भ के बाद व्यक्ति सुलैमान के जीवन के अन्तिम खामोश वर्षों को जानने की इच्छा करेगा। वास्तव में 1 और 2 इतिहास ऐसा ही करते हैं, परन्तु परमेश्वर हमें यहां एक सबक देना चाहता है। यदि सुलैमान का आरम्भिक जीवन मत्ती 6:33 का एक उदाहरण है–"... पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी" तो 1 कुरिन्थियों 10:12 उसके बाद के जीवन की तस्वीर है: "... जो समझता है कि मैं स्थिर हूं, वह चौकस रहे; कि कहीं गिर न पड़े।" सुलैमान की बड़ी बुद्धि के विपरीत हमें उसकी मूर्खता पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

पहले सुलैमान स्वार्थ में मूर्ख था। उसने अपने आपको परमेश्वर से ऊपर रखा। उसने अपना महल बनाने में तेरह साल लगा दिए। यदि हमारे समय का निवेश हमारी प्राथमिकताओं का संकेत है तो सुलैमान के लिए क्या कहा जा सकता है, जिसने परमेश्वर के लिए भव्य मन्दिर के निर्माण में सात वर्ष लगाए परन्तु अपने लिए शानदार महल बनाने में उससे लगभग दोगुना समय? शायद यह छोटी कहावत जो सुलैमान की *नहीं* है, ठीक कहती है: "अपने आप में लिपटा व्यक्ति बहुत छोटा पैकेट बन जाता है।"

दूसरा वह समझौते में मूर्ख था। मन्दिर के बाद मूर्तियों की वेदिया बनवाईं! इस "बुद्धिमान" राजा के शासन में मूर्तिपूजा जिसे दबाने की उसके पिता को इतनी धुन थी, परमेश्वर के निवास स्थान के साथ-साथ स्थापित की गई! मुझे बताया गया है कि "सफलता का रहस्य समझौता होता है।" परन्तु कई बार सांसारिक बुद्धि से किए गए कई समझौते मूर्खता का सार होते हैं। उन "मसीही" व्यापारियों पर ध्यान करें जो खुद शराब नहीं पीते परन्तु तौ भी कॉकटेल पार्टियां देते और उनमें शामिल होते हैं। कई तो अपने ग्राहकों या कर्मचारियों को शराब के गिफ्ट तक भेजते हैं।

तीसरा सुलैमान की मूर्खता विवाह में थी। उसकी 300 पत्नियां और 700 रखैलें थीं। इन पत्नियों ने उसका मन परमेश्वर से दूर का दिया:

> परन्तु राजा सुलैमान फ़िरौन की बेटी, और बहुतेरी और पराई स्त्रियों से, ... प्रीति करने लगा। वे उन जातियों की थीं, जिनके विषय में यहोवा ने इस्राएलियों से कहा था, कि तुम उनके मध्य में न जाना, और न वे तुम्हारे मध्य में आने पाएं, वे तुम्हारा मन अपने देवताओं की ओर नि:सन्देह फेरेंगी; उन्हीं की प्रीति में सुलैमान लिप्त हो गया। ... सो जब सुलैमान बूढ़ा हुआ, तब उसकी स्त्रियों ने उसका मन पराये देवताओं की ओर बहका दिया, और उसका मन अपने पिता दाऊद की नाईं अपने परमेश्वर यहोवा पर पूरी रीति से लगा न रहा। सुलैमान तो सीदोनियों की अशतोरेत नाम देवी, और अम्मोनियों के मिल्कोम नाम घृणित देवता के पीछे चला। और सुलैमान ने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है, और यहोवा के पीछे अपने पिता दाऊद की नाईं पूरी रीति से न चला। उन दिनों सुलैमान ने यरूशलेम के सामने के पहाड़ पर मोआबियों के कमोश नामक घृणित देवता के लिए और अम्मोनियों के मोलेक नामक घृणित देवता के लिए एक एक ऊंचा स्थान बनाया। और अपनी सब पराई स्त्रियों के लिए भी जो अपन-अपने देवताओं को धूप जलातीं और बलिदान करती थीं, उस ने ऐसा ही किया (1 राजाओं 11:1-8)।

परमेश्वर का मन्दिर बनाने वाला व्यक्ति ऐसी स्थिति में कैसे जा सकता है? उसने वही किया जो राजनैतिक रूप में उपयुक्त था। उसने अपने आस-पास के सबसे धनवान और सबसे शक्तिशाली लोगों से समझौते करते हुए अपने आप को फिरौन की बेटियों और फिर मिस्र को सौंप दिया। यह विश्वास करने के लिए ''जैसी करनी वैसी भरनी'' वह न तो पहला था और न अन्तिम। हमें ''अविश्वासियों के साथ न जुड़ने'' की चेतावनी दी गई है। प्रेरित पौलुस ने पूछा, ''धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति?'' (2 कुरिन्थियों 6:14)। कई क्षेत्रों में जैस मित्रता, व्यापारिक संगठनों से जुड़ना (''असमान जुए में जुतना,'' KJV) नासमझी है, परन्तु विशेषकर विवाह में। जवान मसीही जो गैर मसीही के साथ प्रेम करके उससे विवाह करते हैं वे अपने आपको दु:खी विवाहित जीवन में फंसा लेते हैं। एक ही लक्ष्य वाले साथी का स्नेहपूर्ण समर्थन पाने से विश्वासी मसीही जीवन जीना आसान हो जाता है। अपने साथी की इच्छाओं के विपरीत स्वर्ग में पहुंचने की कोशिश करना और बच्चों को उस दिशा में अगुआई देना बहुत कठिन और परेशानी भरा हो सकता है।

चौथा सुलैमान आनन्द और सम्पत्ति की खोज में मूर्ख था। उसने शराब, शबाब, और शायरी में आनन्द ढूंढ़ना चाहा; परन्तु वह नहीं ढूंढ़ पाया। अन्त में वह निराश हो गया। उसे समझ आया कि बड़ी-बड़ी सम्पत्तियों और आनन्द की तलाश बेकार है। सभोपदेशक 1:2 में उसने घोषण की ''सब व्यर्थ है।''

लगता है कि सुलैमान के पास ''यह सब कुछ था।'' इसमें खतरे क्या हैं! यीशु ने कहा, ''परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है'' (मरकुस 10:25)। बहुत अधिक अच्छी चीज़ें बहुत अधिक लोगों को बर्बाद कर देती हैं। इतनी जायदाद हासिल करने के बाद, इतनी जायदाद कि जितनी गप्प मारी जाए कम है, मरने के

बाद सुलैमान क्या छोड़कर गया? *सब कुछ।* दौलत में कोई सच्ची सुरक्षा नहीं मिल सकती। सुलैमान ने यह सब इकट्ठा किया, पांच साल बाद मिस्र के राजा ने आकर वह सब लूट लिया।

मूलत: सुलैमान परमेश्वर की आज्ञा मानने में मूर्ख था। उसके आज्ञा न मानने से उसे और उसके देश को हानि हुई। किसी ने कहा है कि सुलैमान ''अपने पीछे खाली खजाना, असंतुष्ट लोगों और लड़खड़ाता साम्राज्य छोड़कर अत्यधिक खुदगर्जी में मरा।'' बिल्कुल वैसे ही हुआ जैसे परमेश्वर ने सुलैमान को चेतावनी दी थी। परमेश्वर ने राज्य को उसके पुत्र के हाथ से जाने दिया (1 राजाओं 11:9-13)। राज्य में फूट पड़ गई और फिर दासत्व में चला गया। जैसे अपने मन परिवर्तन से पहले प्रेरित पौलुस को समझ आया था वैसे ही इस्राएलियों ने पाया कि परमेश्वर के निर्देश कि ''पैने पर लात मारना कठिन है'' (26:14)।

सारांश

सुलैमान दोनों में से क्या सबसे अधिक था? बुद्धिमान व्यक्ति या मूर्ख? उद्धार पाया हुआ या खोया हुआ? उसके दिमाग के अन्दर एक युद्ध छिड़ा हुआ था। इटली के एक कलाकार ने पुनरुत्थान के दिन की सुलैमान की एक तस्वीर बनाई। उस तस्वीर में सुलैमान आत्माओं के दो जुलूसों को संदेह से देख रहा है, कुछ तो अनन्त जीवन के रास्ते पर हैं, जबकि अन्य अन्धकार और दोषी ठहराए जाने के रास्ते पर। उसने समझ नहीं आ रहा कि वह किन लोगों में है। यह लोगों के दिमाग की उलझन को बताता है।

निजी तौर पर मैं हमेशा से मानताहूं कि सभोपदेशक की पुस्तक इस बात का प्रमाण है कि सुलैमान ने मन फिरा लिया। तौ भी यह कितनी बड़ी त्रासदी है कि उसने इतनी शक्ति को व्यर्थ गंवाया। यदि उसने मन फिरा भी लिया और उसकी आत्मा बचाई भी गई तौ भी नुकसान तो हुआ। इस्राएल बर्बादी के रास्ते पर आ गया। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि सुलैमान ने हमें ताड़ना की है, ''अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, ...'' (सभोपदेशक 12:1)।

आज ही अपना जीवन परमेश्वर को देकर अपनी बुद्धि को दिखाएं। उसकी ओर लौट आएं जो ''सुलैमान से बड़ा'' है (लूका 11:31)। ईमानदारी से उसकी सेवा में बने रहें तो आप अपने आपको सुलैमान से बुद्धिमान साबित कर देंगे।

सीखने के लिए सबक:
हर निर्णय लेने में अगुआई के लिए परमेश्वर की ओर देखें।